गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

Impact Factor : 4.553

ISSN : 2321-8037
नवम्बर-दिसम्बर 2023
Vol. 11, Issue 11-12

# Gina Shodh SANGAM

**Peer Reviewed & Refereed Research Journal**

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

# संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

वर्ष : 11 अंक : 11 – 12 नवम्बर – दिसम्बर : 2023 आईएसएसएन : 2321 – 8037

संस्थापक सम्पादिका :
**स्मृति शेष डॉ. विश्वकीर्ति**

संरक्षक :
**हरविन्द्र कमल, पटियाला**

मार्गदर्शन :
**डॉ. राजेन्द्र गोदारा**
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

**इन्जीनियर सृष्टि चौधरी**
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन, सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

**श्रेष्ठ चौधरी**
सीनियर मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, साहिबजादा अजित सिंह नगर, मोहाली, पंजाब।

प्रधान सम्पादक :
**डॉ. नरेश सिहाग** एडवोकेट
सचिव, गीनादेवी शोध संस्थान, भिवानी (हरियाणा)

विशेषांक सम्पादक :
**डॉ. रीना अग्रवाल**
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

सम्पादक :
**डॉ. रेखा सोनी**
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर – 335001 (राज.)



सम्पादकीय कार्यालय :
**6 – एच 30, जवाहर नगर, श्रीगंगानगर, राजस्थान – 335001**



## सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

**डॉ. सुलक्षणा अहलावत**
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

**डॉ. अरूणा अंचल**
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

**डॉ. सुशीला**
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय,
भिवानी (हरियाणा)

**डॉ. अल्पना शर्मा**
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर
(राजस्थान)

**डॉ. विजय महादेव गाडे**
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

**डॉ. लता एस. पाटिल**
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

**डॉ. रीना कुमारी**
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

**श्री राकेश शंकर भारती**
यूक्रेन।

**श्री हेमराज न्यौपाने**
नेपाल।

**डॉ. ममता तनेजा**
अबोहर, पंजाब।

**डॉ. प्रियंका खंडेलवाल**
बराण, राजस्थान।

**प्रो. मधुबाला**
राजकीय महिला महाविद्यालय,
हिसार।

**प्रो. पीयूष कुमार द्विवेदी**
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

**डॉ. हवासिंह ढाका**
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

**डॉ. मानसिंह दहिया**
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
तोशाम (हरियाणा)

**डॉ. राजेश शर्मा**
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
(राजस्थान)

**डॉ. मोहिनी दहिया**
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

**डॉ. मुकेश चंद**
राजकीय महाविद्यालय, बाडी,
धौलपुर, राजस्थान।

**डॉ. पवन ठाकुर**
बरेली (उत्तर प्रदेश)

**डॉ. मोरवे रोशन के.**
यूनाईटिड किंगडम।

**डॉ. अनुपमा**, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

**डॉ. आर.के विश्वास**
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

कानूनी सलाहकार : **डॉ. रामफल दलाल** एडवोकेट, भिवानी
**श्रीमती रूपिन्द्र कौर**, एडवोकेट, पटियाला।



प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक **डॉ. नरेश सिहाग**, एडवोकेट ने **मनभावन प्रिन्टर्ज**, पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

# संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

(Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences)



सचिव :

**डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट**

**202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,**

**भिवानी-127021 (हरियाणा)**

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152


**संगम मासिक पत्रिका** में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।


*Published by :*

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152



All Right Reserved by Publisher & Editor


Price

Individual/Institutional : 1300/-

*Disclaimer :*

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.


*Printed by :* Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Impact Factor : 2.636
ISSN : 2321-8037
Gina Shodh SANGAM
Peer Reviewed & Refereed Research Journal
International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)
Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)



तालिका– 2

**शैक्षणिक / शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली**

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसेः प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

| क्रम सं. | शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप | विज्ञान / अभियांत्रिकी / कृषि / चिकित्सा / पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय | भाषा / मानविकी / कला / सामाजिक विज्ञान / पुस्तकालय / शिक्षा / शारीरिक शिक्षा / वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं |
|---|---|---|---|
| 1 | समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र | 08 प्रति पत्र | 10 प्रति पत्र |
| 2 | प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त ) | | |
| | (क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया : | | |
| | अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक | 12 | 12 |
| | राष्ट्रीय प्रकाशक | 10 | 10 |
| | संपादित पुस्तक में अध्याय | 05 | 05 |
| | अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक | 10 | 10 |
| | राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक | 08 | 08 |
| | | | |
| | | | |
| | (ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य | | |
| | अध्याय अथवा शोध पत्र | 03 | 03 |
| | पुस्तक | 08 | 08 |
| 3 | आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास | | |
| | (क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास | 05 | 05 |
| | (ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना | 02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम | 02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम |

# अनुक्रमाणिका


| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. रेखा सोनी | 6–6 |
| 2. | आज के युग में दृश्य–श्रव्य अनुवाद : एक संक्षिप्त परिचय | अनुश्री पी. एस. | 7–12 |
| 3. | अनुवाद संकल्पना के संदर्भ में मानक अनुवाद में पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन का विश्लेषणात्मक अध्ययन | डॉ. रंजीत कुमार | 13–24 |
| 4. | वैश्वीकरण दौर में भारतीय शिक्षा और भूगोल शिक्षण | डॉ. नटवर तेली | 25–29 |
| 5. | Nirad C Chaudhury : AS AN AUTOBIOGRAPHER | Poonam Yadav | 30-34 |
| 6. | ज्ञान चतुर्वेदी की रचना 'पागलखाना' में व्यक्त सामाजिक चेतना | कु० विजय लक्ष्मी, डॉ० राकेश चन्द्र | 35–39 |

# विशेषांक सम्पादक की कलम से..

संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 11, Issue 11-12
पृष्ठ : 7-12

# आज के युग में दृश्य–श्रव्य अनुवाद : एक संक्षिप्त परिचय

**अनुश्री पी. एस.**
शोध विद्यार्थी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़।

**परिचय :–**

दृश्य–श्रव्य अनुवाद (ऑडियो–विजुअल अनुवाद), को संक्षिप्त रूप से अक्सर ए. वी. टी. के नाम से जाना जाता है। इसमें ऑडियो या विजुअल रूपों या दोनों के संयोजन में एक भाषा से दूसरी भाषा में पाठ–सामग्री का अनुवाद शामिल होता है। पारस्परिक रूप से जुड़ी हुई आज की इस दुनिया में, दृश्य–श्रव्य सामग्री, संचार माध्यम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फिल्मों और टीवी शो से लेकर कॉर्पोरेट प्रस्तुतियों एवं ऑनलाइन पाठ्यक्रमों तक, उच्च गुणवत्ता वाले दृश्य–श्रव्य अनुवादों की मांग पहले इतनी अधिक नहीं रही। इस लेख में दृश्य–श्रव्य अनुवाद तथा उसमें जुड़ी संगतियों के बारे में जैसे कि इसके महत्व, चुनौतियों और इसके पीछे की विकसित तकनीक पर संक्षिप्त रूप से परिचय देने की कोशिश किया गया है। इस डिजिटल युग में सूचना का प्रसार भाषाई और सांस्कृतिक सीमाओं से आगे निकल गया है। इसने दृश्य–श्रव्य अनुवाद के महत्व को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। सिनेमा के उत्कृष्ट कृतियों से लेकर शैक्षिक वीडियो और विविध प्रस्तुतियों तक, दृश्य–श्रव्य सामग्री के सटीक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील अनुवाद की मांग सर्वोपरि हो गई है। दरअसल, दृश्य–श्रव्य अनुवाद संभवतः वह पाठ्यक्रम है जिसमें पाठ शुरू से अंत तक सबसे अधिक बदलाव से गुजरता है। इस प्रक्रिया के सभी चरणों में अनुवादक द्वारा प्रस्तुत पाठ में कुछ हद तक हेरफेर शामिल है। यह वस्तुतः अपरिहार्य है कि अनुवादक द्वारा शुरू में दिए गए अनुवाद में संशोधन होंगे। जैसाकि कहा जाता है, अनुवादक द्वारा पूर्ण अनुवाद प्रस्तुत करने के बाद, पाठको प्रूफ–रीडर के पास भेजा जा सकता है और फिर सिंक्रनाइज़ेशन से गुजरना पड़ सकता है। इन दो चरणों में पाठ में संशोधन शामिल है, जो कभी–कभी अपेक्षित नहीं होते हैं और कभी–कभी विशेष रूप से आवश्यक हो सकता है।

**दृश्य–श्रव्य अनुवाद का महत्व :–**

1. **सांस्कृतिक अभिगम्यता :–** ऐसी दुनिया में जहां विविधता का जश्न मनाया जाता है, ऑडियो–विजुअल अनुवाद उस पुल के रूप में कार्य करता है जो विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों को साझा सामग्री के माध्यम से जुड़ने की अनुमति देता है। यह सुनिश्चित करता है कि मूल सामग्री में अंतर्निहित सूक्ष्मताएं, हास्य एवं सांस्कृतिक संदर्भ अनुवाद में खो न जाएं। दृश्य–श्रव्य अनुवाद संस्कृतियों के बीच अंतर को कम करता है, जिससे सामग्री वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ हो जाती है। यह सुनिश्चित करता है कि कई गई मूल पाठ में मौजूद अंशों की बारीकियों, चुटकुलों और सांस्कृतिक संदर्भों को सटीक रूप से संप्रेषित किया जाए।

2. **बाज़ार विस्तारण :–** व्यवसायों के लिए, दृश्य–श्रव्य अनुवाद उनकी पहुंच बढ़ाने का प्रवेश द्वार है। अच्छी तरह से क्रियान्वित अनुवाद कार्य नीति के साथ नए–नए प्रभावी दृश्य–श्रव्य अनुवाद कंपनियों को बाजारों में प्रवेश करने, विविध दर्शकों से जुड़ने और वैश्विक उपस्थिति स्थापित करने में अनुमति देता है और सक्षम बनाता है। अंतर भाषी और अंतर सांस्कृतिक प्रचार की अंतरराष्ट्रीय नीति को बढ़ावा देने के लिए, उपशीर्षक प्रक्रिया के कलाकारों को ऑडियो विजुअल उत्पाद के लिए अतिरिक्त लागत मानी जाने वाली राशि, यानी उपशीर्षक तथा विपणन के सबसे लागत प्रभावी तरीके के बीच उपशीर्षक कार्यक्रम एक समझौता करना चाहिए। विपणक को लक्ष्य बाजार के साथ वांछित स्तर के लेन–देन के लिए उत्पादकों और वितरकों की आवश्यकता पड़ता है और दृश्य–श्रव्य परिदृश्य के विभिन्न क्षेत्रों में उपशीर्षक, उदाहरण के लिए फिल्मों की मांग का विश्लेषण करना चाहिए। मार्केटिंग का कार्य मांग के स्तर को प्रभावित करके उत्पाद के लाभों को दर्शकों की जरूरतों और रुचियों के साथ जोड़ने के तरीके ढूंढना है जिससे कंपनी को अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी। यह कार्य विपणन अनुसंधान एवं नियोजन द्वारा किया जाता है।

**दृश्य–श्रव्य अनुवाद के प्रकार :–**

1. **उपशीर्षक :–** उपशीर्षक, दृश्य–श्रव्य अनुवाद का सबसे सामान्य रूप है। व्यापक रूप से नियोजित इस तकनीक में दर्शकों को मूल ऑडियो सुनते हुए अनुवादित पाठको पढ़ने की अनुमति मिलती है। उपशीर्षक के लिए संक्षिप्तता और सटीकता के बीच एक नाजुक संतुलन की आवश्यकता होती है। उपशीर्षक को उस सटीक फ्रेम के साथ मेल खाते हुए देखा जाता है जहां एक वक्ता बात शुरू करता है और समाप्त करता है, कुछ फ्रेम के कभी–कभी समायोजन के साथ या अधिक पढ़ने के समय की अनुमति देता है तथा परिवर्तन की अनुमति लेता है। दर्शकों को यही उम्मीद है। उपशीर्षक जो वक्ता की बात सुनने से पहले ही प्रविष्ट हो जाते हैं, या जो तुरंत प्रकट नहीं होते, भ्रमित करने वाले होते हैं। दर्शकों को याद दिलाया जाता है कि वे एक अनुवाद पढ़ रहे हैं और उन्हें लगता है कि कुछ छूट गया है या गलत है, जिससे उपशीर्षक पर विश्वास कम पड़ जाता है। उपशीर्षक मूलतः एक टीम प्रयास है। जब एक टीम के सभी सदस्य प्रक्रिया के सभी हिस्सों को निष्पादित करने में सक्षम होते हैं, जो प्रत्येक चरण के माध्यम से कई जांचों से गुजरना होता है।

2. **डबिंग :–** डबिंग में मूल ऑडियो को लक्ष्य भाषा में सिंक्रनाइज़ अनुवाद के साथ बदलना शामिल है। यह विशेष रूप से फिल्मों और टीवी शो में लोकप्रिय है। डबिंग प्रक्रिया अत्यधिक जटिल है, क्योंकि डब संस्करण हमेशा पहले ही तैयार किया जाता है और इसमें कई सारे कारक भी शामिल होते हैं। अक्सर डबिंग स्क्रिप्ट में अनुवादक ने अनुवाद की तुलना में अनुकूलन जैसी कार्यनीति का विकल्प चुना है। डबिंग के उद्देश्य के मापदंडों के भीतर, जो स्वीकार्य है।

3. **वॉयस–ओवर :–** डबिंग के समान, वॉयस–ओवर मूल ऑडियो को बरकरार रखता है लेकिन इसे अनुवादित आवाज के साथ प्रसरण किया जाता है। इस तकनीक का उपयोग अक्सर वृत्तचित्रों, साक्षात्कारों और समाचार क्षेत्रों में किया जाता है।

4. **लिप सिंक्रोनाइजेशन :–** लिप सिंक्रोनाइजेशन दृश्य–श्रव्य अनुवाद में खासकर डबिंग के संदर्भ में चुनौतिपूर्ण प्रमुख कारकों में से एक है। इसे अक्सर इस प्रकार के अनुवाद की विभेदक विशेषता के रूप में माना जाता है, हालांकि वास्तव में, यह केवल एक महत्वपूर्ण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जो धीरे–धीरे डबिंग पेशेवरों

और दर्शकों दोनों के समर्थन नष्ट होता जा रहा है। डबिंग या वॉयस–ओवर में लिप सिंक्रोनाइज़ेशन हासिल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अनुवादकों को अपने अनुवादों को मूल वक्ता की ताल और मुँह की गतिविधियों के साथ संरेखित करने के लिए सावधानीपूर्वक समय देना चाहिए। अनुवाद का समय एवं मूल ऑडियो के समय दोनों मेल खाना चाहिए। जहां अनुवाद वक्ता के मुंह की गतिविधियों के साथ सहजता से संरेखित होकर दोष रहित लिप सिंक्रोनाइजेशन प्राप्त करना, अपने आप में एक कला है। सिंक्रोनाइज़ेशन अनुवादक को अपने रचनात्मक कौशल का पूर्ण उपयोग करने के लिए मजबूर करता है। इसलिए निस्संदेह इसका अनुवाद प्रक्रिया और उत्पाद पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

5. **ट्रांसक्रिप्शन और कैप्शनिंग :–** इसमें श्रवण बाधित दर्शकों की सुविधा के लिए सुलभता उद्देश्यों के लिए बोली गई सामग्री का एक टेक्स्ट संस्करण प्रदान करना शामिल है। एक महत्वपूर्ण पहुंच सुविधा प्रदान करते हुए, प्रतिलेखन में बोली जाने वाली सामग्री का एक पाठ संस्करण प्रदान करना शामिल है। दूसरी ओर, कैप्शनिंग में श्रवण बाधित दर्शकों की सहायता के लिए स्क्रीन पर टेक्स्ट प्रदर्शित करना शामिल है।

**दृश्य–श्रव्य अनुवाद में चुनौतियाँ :–**

श्रवण और दृश्य दोनों तत्वों की एक साथ उपस्थिति के कारण यह अन्य प्रकार के अनुवाद की तुलना में चुनौतियों का एक अनूठा सेट प्रस्तुत करता है। दृश्य–श्रव्य अनुवाद में आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियाँ इस प्रकार हैं :–

1. **समय की कमी :–** अनुवादक अक्सर तंग समय सीमा के तहत काम करते हैं, खासकर मनोरंजन जैसे उद्योगों में जहां रिलीज शेड्यूल महत्वपूर्ण होते हैं। इसके लिए उन्हें अनुवाद की गुणवत्ता से समझौता किए बिना कुशलतापूर्वक काम करने की आवश्यकता है। बोले गए संवाद या उपशीर्षक प्रदर्शन के लिए उपलब्ध सीमित समय के कारण मूल सामग्री का पूरा अर्थ बताना मुश्किल हो सकता है। अनुवादकों को यह सुनिश्चित करते हुए संक्षिप्त होना चाहिए कि अनुवादित पाठ सटीक और सुसंगत है।

2. **सांस्कृतिक संवेदनशीलता :–** अनुवादकों को सांस्कृतिक बारीकियों से परिचित होना चाहिए, जो उन्हें हास्य, कठबोली, मुहावरों, चुटकुलों और संदर्भों को एक विश्वसनीय अनुकूलन सुनिश्चित करने की जटिलताओं को नेविगेट करने में सक्षम बनाता है, जिसका लक्ष्य भाषा में प्रत्यक्ष समकक्ष नहीं हो सकता है और उचित रूप से अनुवादित होना चाहिए। अनुवादकों को स्रोत और लक्ष्य दोनों संस्कृतियों की गहरी समझ होनी चाहिए। इच्छित अर्थ और सांस्कृतिक संदर्भ को बनाए रखते हुए इन तत्वों को अपनाना चुनौतीपूर्ण है।

3. **प्रासंगिक अनुकूलन :–** उस संदर्भ को समझना जिसमें दृश्य–श्रव्य सामग्री प्रस्तुत की जानी है, वह महत्वपूर्ण है। इसमें पात्रों, सेटिंग और समग्र कथानक का ज्ञान शामिल है, जो अनुवाद में प्रयुक्त शब्दों और अभिव्यक्तियों की रुचि को प्रभावित कर सकता है। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि ज्यादातर मामलों में, न तो प्रूफ–रीडर और नही सिंक्रोनाइज़र मूल भाषा को समझते हैं। परिणाम स्वरूप, यह जोखिम है कि किए गए परिवर्तन मूल पाठ से भिन्न हो सकते हैं।

4. **पाठ की लंबाई पर प्रतिबंध :–** उपशीर्षक, विशेष रूप से, सख्त वर्ण और पंक्ति सीमाओं के साथ आते हैं जिसके लिए संक्षिप्त लेकिन सटीक अनुवाद की आवश्यकता होती है। अनुवादकों को सटीकता या संदर्भ का त्याग किए बिना, संक्षिप्त रूप से अर्थ बताने में अपने आप को माहिर बनाना चाहिए।

5. **सिंक्रनाइज़ेशन :–** यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि अनुवादित ऑडियो या उपशीर्षक मूल ऑडियो और दृश्य तत्वों के साथ सिंक्रनाइज़ हैं। यह उन मामलों में विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है जहां लिप–सिंकिंग महत्वपूर्ण है, जैसे कि फिल्में या टीवी शो में।

6. **तकनीकी सीमाएँ :–** कुछ मामलों में, तकनीकी बाधाएँ हो सकती हैं जो अनुवाद प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ भाषाओं को समान अर्थ व्यक्त करने के लिए अधिक वर्णों या शब्दों की आवश्यकता हो सकती है, जो स्थान सीमाओं के कारण उपशीर्षक में एक चुनौती हो सकती है।

7. **आवाज और टोन मिलान :–** वॉयसओवर या डबिंग का अनुवाद करते समय, एक ऐसे आवाज अभिनेता को ढूंढना जो मूल अभिनेता के स्वर, शैली और भावनात्मक अभिव्यक्ति से मेल खा सके जो मुश्किल हो सकता है। मूल प्रदर्शन की अखंडता बनाए रखने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

8. **अभिगम्यता संबंधी विचार :–** विकलांग व्यक्तियों तक विचार पहुंचना, यह सुनिश्चित करना ए.वी.टी. का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें सटीक और स्पष्ट उपशीर्षक, ऑडियो विवरण और सुलभ सामग्री के अन्य रूप प्रदान करना शामिल है।

9. **तकनीकी विशेषज्ञता :–** माध्यम के आधार पर, अनुवादकों को ऑडियो–विजुअल अनुवाद के लिए विशेष सॉफ़्टवेयर या टूल से परिचित होने की आवश्यकता हो सकती है, जैसे उपशीर्षक सॉफ़्टवेयर, ऑडियो संपादन प्रोग्राम और डबिंग उपकरण।

10. **कानूनी और कॉपीराइट मुद्दे :–** अनुवादकों को कॉपीराइट और लाइसेंसिंग प्रतिबंधों के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में ऑडियो–विजुअल सामग्री वितरण से संबंधित किसी भी कानूनी आवश्यकताओं के बारे में पता होना चाहिए।

11. **गुणवत्ता नियंत्रण :–** अनुवाद प्रक्रिया के दौरान निरंतरता और सटीकता बनाए रखना आवश्यक है। गुणवत्ता नियंत्रण उपाय, जैसे प्रूफरीडिंग और समीक्षा, यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि अंतिम उत्पाद वांछित मानक स्तर को पूरा करता है।

12. **नैतिक विचार :–** अनुवादकों को नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है, खासकर संवेदनशील या विवादास्पद सामग्री से निपटने के दौरान। उन्हें सटीकता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और संभावित पूर्वाग्रहों से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए।

**दृश्य–श्रव्यअनुवाद में तकनीकी प्रगति :–**

1. **मशीनी अनुवाद एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता :–** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.)–संचालित अनुवाद उपकरण तेजी से परिष्कृत होते जा रहे हैं, जो अनुवादकों को उनके काम में सहायता कर रहे हैं। वे मानव अनुवादकों को अमूल्य सहायता प्रदान करते हुए सटीकता बनाए रखते हुए प्रक्रिया को तेज़ कर सकते हैं।

2. **स्वचालित वाक् पहचान (ए.एस.आर.) :–** ए.एस.आर. तकनीक प्रतिलेखन और कैप्शन की सटीकता में सुधार कर रही है, जिससे उन्हें श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अधिक सुलभ और सटीक बनाया जा रहा है।

3. **आवाज संश्लेषण :–** स्वाभाविकता और अभिव्यक्ति में प्रगति के साथ सिंथेटिक आवाजों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। यह तकनीक मानव वॉयस–ओवर का विकल्प प्रदान करती है, खासकर उन परिदृश्यों में जहां मानव स्पर्श आवश्यक नहीं हो सकता है। आवाजें अधिक प्राकृतिक और सजीव होती जा रही हैं, जो एसा लगता

है मानो मानवीय वॉयस–ओवर का विकल्प पेश कर रही हैं।

**दृश्य-श्रव्य अनुवाद में भविष्य के अभिवृत्ति :-**

1. **इमर्सिव टेक्नोलॉजीज :-** जैसे–जैसे आभासी वास्तविकता (वी.आर.) और संवर्धित वास्तविकता (ए.आर) जोर बढ़ रहा है, अनुवादित पाठ गहन (इमर्सिव) अनुभवों की मांग बढ़ने की संभावना है। यह अत्याधुनिक तकनीकों में दृश्य–श्रव्य अनुवाद के एकीकरण के लिए रोमांचक अवसर प्रस्तुत करता है। इसमें आभासी दुनिया के भीतर सामग्री का अनुवाद करना या आभासी बैठकों के दौरान वास्तविक समय में अनुवाद प्रदान करना शामिल हो सकता है।

2. **इंटरएक्टिव अनुवाद :-** प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, इंटरैक्टिव अनुवाद जो उपयोगकर्ताओं को उनकी भाषा प्राथमिकताओं के आधार पर सामग्री को अनुकूलित करने की अनुमति देते हैं, अधिक प्रचलित हो सकते हैं।

3. **मशीन अनुवाद और वाक् पहचान में प्रगति :-** कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग में चल रहे विकास के साथ, मशीन अनुवाद प्रणालियों की सटीकता और क्षमता में सुधार होने की संभावना है। इससे अधिक कुशल और विश्वसनीय ऑडियो–विजुअल अनुवाद सेवाएं प्राप्त हो सकती हैं।

4. **वास्तविक समय अनुवाद सेवाएँ :-** वास्तविक समय या लाइव ऑडियो–विजुअल अनुवाद, जहां लाइव इवेंट या बातचीत के दौरान बोली जाने वाली भाषा का वास्तविक समय में अनुवाद किया जाता है, अधिक सामान्य हो सकता है। इसे उन्नत वाक् पहचान और मशीनी अनुवाद प्रौद्योगिकियों के माध्यम से सुगम बनाया जा सकता है।

5. **वैयक्तिकृत उपयोगकर्ता अनुभव :-** प्रौद्योगिकी वैयक्तिकृत ऑडियो–विजुअल अनुवाद अनुभवों की अनुमति दे सकती है, जहां उपयोगकर्ता भाषा, आवाज और शैली सहित अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर अनुवाद सेटिंग्स को अनुकूलित कर सकते हैं।

6. **मल्टीमॉडल अनुवाद :-** भविष्य के ऑडियो–विजुअल अनुवाद सिस्टम में पाठ, भाषण, चित्र और वीडियो जैसे कई तौर–तरीके शामिल हो सकते हैं। इससे अधिक व्यापक और सटीक अनुवाद संभव हो सकेगा, विशेषकर उन संदर्भों में जहां दृश्य तत्व महत्वपूर्ण हैं।

7. **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) – संचालित सामग्री स्थानीयकरण :-** ए.आई.–संचालित एल्गोरिदम दृश्य–श्रव्य सामग्री के स्थानीयकरण में सहायता कर सकता है, जब यह सुनिश्चित करते हैं कि यह विशिष्ट लक्षित दर्शकों के लिए सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और प्रासंगिक हो।

8. **समावेशी डिजाइन और पहुंच :-** विकलांग लोगों के लिए ऑडियो–विजुअल सामग्री को सुलभ बनाने पर अधिक जोर दिया जा सकता है। इसमें बेहतर बंद कैप्शनिंग, सांकेतिक भाषा व्याख्या और अन्य पहुंच सुविधाएँ शामिल हो सकती हैं।

9. **नैतिक विचार और पूर्वाग्रह शमन :-** किसी भी एआई–संचालित तकनीक की तरह, ऑडियो–विजुअल अनुवाद प्रणालियों में संभावित पूर्वाग्रहों को संबोधित करने, विविध भाषाई और सांस्कृतिक संदर्भों में निष्पक्षता और सटीकता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

10. **ब्लॉकचेन और कॉपीराइट मुद्दे :-** ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों का उपयोग विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में ऑडियो–विजुअल सामग्री से संबंधित कॉपीराइट और लाइसेंसिंग चिंताओं को दूर करने के लिए किया जा

सकता है।

11. **स्मार्ट डिवाइस और IoT के साथ एकीकरण :–** ऑडियो–विजुअल अनुवाद को स्मार्ट होम डिवाइस, पहनने योग्य तकनीक और IoT सिस्टम में सहजता से एकीकृत किया जा सकता है, जिससे विभिन्न रोजमर्रा के परिदृश्यों में वास्तविक समय में अनुवाद की अनुमति मिलती है।

**निष्कर्ष :–**

ऑडियो–विजुअल अनुवाद एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो विविध वैश्विक दर्शकों के लिए सामग्री को सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्नत प्रौद्योगिकी और कुशल अनुवादकों की विशेषज्ञता की सहायता से, दृश्य–श्रव्य अनुवाद का भविष्य सांस्कृतिक आदान–प्रदान के विस्तार और अंतर्राष्ट्रीय संचार की सुविधा के लिए रोमांचक संभावनाएं रखता है। ऑडियो–विजुअल अनुवाद प्रौद्योगिकी और संस्कृति के चौराहे पर खड़ा है, जो तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में वैश्विक संचार की सुविधा प्रदान करता है। जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ रही है और कुशल अनुवादक भाषाई अनुकूलन की सीमाओं को आगे बढ़ा रहे हैं, दृश्य–श्रव्य अनुवाद का भविष्य एक गतिशील और परिवर्तनकारी शक्ति होने का वादा करता है, जो अधिक से अधिक अंतर–सांस्कृतिक समझ और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देता है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि तकनीकी विकास की गति तेज़ हो सकती है, जहाँ जो अंतमें कहा गया बिंदुओं से अद्यतन होकर नए अभुवृत्तिएवं नवाचार सामने आ सकते हैं। इसलिए, मैं दृश्य–श्रव्य अनुवाद अभिवृत्ति पर नवीनतम अंतर्दृष्टि के लिए क्षेत्र के नवीनतम स्रोतों या विशेषज्ञों से परामर्श करने की सलाह दिया जाता है। कुल मिलाकर, दृश्य–श्रव्य अनुवाद के लिए एक अद्वितीय कौशल सेट की आवश्यकता होती है जो भाषाई दक्षता, सांस्कृतिक जागरूकता, तकनीकी विशेषज्ञता और रचनात्मकता को जोड़ती है। इस क्षेत्र में अनुवादक सामग्री को उसके मूल इरादे और प्रभाव को संरक्षित करते हुए वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**संदर्भ ग्रंथ :–**


1. ऑडियो वीशुएल ट्रांसलेशन इन दी तर्ड मिलेनियम, जार्ज डियज़ सिंटास।
2. ऑडियो वीशुएल ट्रांसलेशन – लैंग्वेज ट्रांस्फर ऑन स्क्रीन, जार्ज डियज़ सिंटास एवं गुनिल्ला अंडरमन द्वारा संपादित।
3. टॉपिक्स इन ऑडियो वीशुएल ट्रांसलेशन, पिलर ओरियो द्वारा संपादित।

संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 11, Issue 11-12
पृष्ठ : 13-24

# अनुवाद संकल्पना के संदर्भ में मानक अनुवाद में पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**डॉ. रंजीत कुमार**
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, कैब्स, डी.आर.डी.ओ, बेंगलुरु।

अनुवाद कार्य किसी भी जीवंत भाषा में एक अनिवार्य प्रक्रिया है। वह दूसरी भाषाओं के साथ आदान–प्रदान का, ग्रहणशीलता के संबंध का एक महत्त्वपूर्ण साधन भी है। अनुवाद के बिना भाषाएं, अपने ही भीतर बंद होकर विचारों, भावों और अनुभव के व्या पक क्षेत्र से कट जाती हैं, और उनकी अपनी सृजनात्मंक ऊर्जा भी अवरुद्ध होकर सूखने लगती है। सभी भारतीय भाषाएं खासकर हिंदी तो इस देश की विशेष राजनैतिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण यों भी बहुत हद तक अनुवाद–निर्भर और अनुवाद उन्मुख है और बहुत दिनों से हिंदी में देश–विदेश की भाषाओं का साहित्य् अनुदित होता है। अनुवाद कार्य एक सामाजिक दायित्वे है जिससे हमारे देश की साहित्य का विकास होता है साथ ही अनुवादक के माध्याम से विदेशी भाषा का साहित्य का आनंद हम लोक भाषा में प्राप्तह करते हैं। सारे संसार की जानकारी एवं प्रगति की सूचना हमें अनुदित साहित्य से प्राप्ता होता है। अनवुाद आज केवल हमारे देश की ही आवश्यकता नहीं बल्कि विश्व की आवश्यककता है।

प्रायः एक व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवनकाल में 2 या 3 भाषाएं मेहनत करके सीख पाता है, परंतु विश्व भर में लगभग 150 भाषाएं हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार का साहित्य उपलब्ध है। विज्ञान के चमत्कार ने हमें विश्व को बहुत ही नजदीक ला दिया और अनुवाद दो भाषाओं एवं संस्कृतियों की दूरी को कम कर दिया है। इससे अनुवाद भी प्रभावित हुआ आम लोगों की आवश्यक जानकारियों एवं सूचनाओं को अनुवाद के माध्यम से आमजन तक प्राप्त होने लगा उससे आमजन का विकास हुआ। चिंतन एवं मनन का क्षेत्र भी व्यापक हुआ। अनुवाद के सेतु सभी भाषाओं की नदी को पार कराता है। यह देश के विकास एवं समृद्धि का साधन है। हम दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद साधन एवं साध्य दोनों है। अनुवाद साहित्य के विस्तार एवं संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसके माध्यम से ज्ञान विज्ञान का विकास होता है साथ ही आमजन के लिए भाषा सेतु का काम करता है। विश्व की सांस्कृतिक विरासत एवं सभ्यता की जानकारी अनूदित साहित्य से प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यवसाय एवं वाणिज्य का द्वार अनुवाद खोलता है। विश्व को एक देश से दूसरे देश से जोड़ने में भी अनुवाद की भूमिका उल्लेखनीय रहती है।

**अनुवाद के सिद्धांत :–**

अनुवाद की संपूर्ण जानकारी अनुवाद के सिद्धांत के माध्यसम से प्राप्त होता है। इसके साथ ही अनुवाद का सैद्धांतिक विवेचन के माध्यम से अनुवाद के विभिन्न विचारधारा, दर्शन और सिद्धांत की जानकारी प्राप्त होती है।

अनुवाद आज अपने सैद्धान्तिक संदर्भ में बहुआयामी और प्रयोजन में बहुमुखी हो गया है, किन्तु अनुवाद की सार्थकता और व्यावहारिकता में जो संवर्धन हुआ, उसी अनुपात में उसके सिद्धांतों पर गहराई से चिंतन नहीं हुआ। कुछ विद्वानों ने अनुवाद को 'अर्थान्तरण' अथवा 'भाषिक प्रतिस्थापन' की संज्ञा दी है, किन्तु अनुवाद न तो 'अर्थान्तरण' है और न ही 'भाषिक प्रतिस्थापन'। वस्तुतः भाषा की प्रकृति ऐसी स्थिर और समरूपी नहीं है कि एक भाषा की इकाई को दूसरी भाषा की इकाई द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके। "अनुवाद की परिभाषाओं, प्रक्रिया एवं अनुवाद चिंतन के उपरांत यह आवश्यक हो जाता है कि अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों पर भी चर्चा की जाए। वस्तुतः अनुवाद सिद्धान्त कोई विशिष्ट विचारधारा नहीं है बल्कि विभिन्न विचारकों ने अनुवाद के संबंध में जो सिद्धान्त बताए हैं वे अनुवाद सिद्धान्त कहलाते हैं।"[31]

**अनुवाद के उद्देश्य :–**

अनुवाद का मुख्य उद्देश्य दो या दो से अधिक भाषा के बीच सेतु का कार्य करना होता है। दूसरे शब्दों दो या दो अधिक क्षेत्र, राष्ट्र की विभिन्न भाषा– संस्कृरति, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन को दूसरे भाषा में उपलब्ध कराता है। दो संस्कृति एवं भाषा की दूरी को कम करता है। ज्ञान एवं विज्ञान की सूचना मनोवांछित या भाषा में उपलब्ध कराता है। अनुवाद आज के युग का चमत्कार जो दो देशों या समाजों की दूरी को पाटता है। "एक भाषा के भाव–वैभव को ही नहीं, बल्कि उसके ध्वन्यात्मक प्रतीकों को भी दूसरी भाषा में यथावत रूपांतरित और प्रतिस्थापित करना अनुवादक का लक्ष्य होता है, इसीलिए अनुवाद को 'एक सांस्कृतिक सेतु' की संज्ञा प्राप्त हुई है। इसे एक ऐसी तकनीक माना गया है 'जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडंबनाओं से बचने के लिए किया था'।"[1] इस प्रकार अनुवाद आज के युग में भाषा साहित्यक के विस्तार एवं संवर्द्धन के साथ–साथ मानवीय, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, विश्व शांति एवं विश्व समृद्धि के पवित्र लाभकारी उद्देश्यों का पूरा करता है।

अनुवाद की संपूर्ण जानकारी अनुवाद के सिद्धांत के माध्यम से प्राप्त होता है। इसके साथ ही अनुवाद का सैद्धांतिक विवेचन के माध्यम से अनुवाद के विभिन्न मानक सिद्धांत की जानकारी प्राप्ति होती है। अनुवाद आज अपने सैद्धान्तिक संदर्भ में बहुआयामी और प्रयोजन में बहुमुखी हो गया है, किन्तु अनुवाद की सार्थकता और व्यवहारिकता में जो संवर्धन हुआ, उसी अनुपात में उसके सिद्धांतों पर गहराई से चिंतन नहीं हुआ। कुछ विद्वानों ने अनुवाद को 'अर्थान्तरण' अथवा 'भाषिक प्रतिस्थापन' की संज्ञा दी है, किन्तु अनुवाद न तो 'अर्थान्तरण' है और न ही 'भाषिक प्रतिस्थापन'। वस्तुतः भाषा की प्रकृति ऐसी स्थिर और समरूपी नहीं है कि एक भाषा की इकाई को दूसरी भाषा की इकाई द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके। "अनुवाद की परिभाषाओं, प्रक्रिया एवं अनुवाद चिंतन के उपरांत यह आवश्यक हो जाता है कि अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों पर भी चर्चा की जाए। वस्तुतः अनुवाद सिद्धान्त कोई विशिष्ट विचारधारा नहीं है बल्कि विभिन्न विचारकों ने अनुवाद के संबंध में जो सिद्धान्त बताए हैं वे अनुवाद सिद्धान्त कहलाते हैं।"[1]

इसी विकासशीलता के पूर्वानुमान की दृष्टि से प्रख्यात अनुवादशास्त्री पॉल एंजिल्स ने कहा था कि 21वीं

सदी में प्रत्येक देश में दो प्रकार का साहित्य होगा। एक उसका अपना साहित्य और दूसरा अनूदित साहित्य। इसी अनूदित साहित्य के माध्यम से हम दूसरी भाषा, संस्कृति, समाज, ज्ञान–विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी और उसकी रचनाधर्मिता से साक्षात्कार कर सकते हैं। भाषाविदों के द्वारा दी गई अनुवाद की परिभाषाएं निम्न है– अनुवाद संबंधी सिद्धांतों पर स्वतंत्र ग्रंथों का लेखन वस्तुतः बीसवीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ। इसी शताब्दी के दौरान साहित्यिक और भाषा वैज्ञानिक पत्रिकाओं में अनुवाद पर लेखों का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इन्हीं भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं ने अनुवाद की कई परिभाषाओं को जन्म दिया। कई परिभाषाओं पर सवाल भी उठाए गए तो कुछ परिभाषाओं को मान्यताएं भी मिलीं लेकिन आज भी अनुवाद की कोई एक परिभाषा नहीं मिलती है। परिभाषाओं पर विचार किया जाए तो अनुवाद की परिभाषा भाषा वैज्ञानिकों ने भी दी है और साहित्यकारों (कवियों) ने भी दी है।

(1) Translating consists in producing, in the receptor language the closet natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and second in style. (Nida)

**प्रसिद्ध परिभाषा –** ''मूल भाषा के संदेश के समतुल्य संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। संदेशों की यह समतुल्यता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।''[3] (नाइडा एवं टेबर)

**अनुवाद का स्वरूप :–**

अनुवाद सिद्धांत के स्वरूप के दो उल्लेखनीय पक्ष हैं–

1. समन्वय और
2. संतुलन अनुवाद सिद्धांत

अनुवाद का सिद्धांत मुख्यतः अनुवाद की प्रकिया एवं लक्ष्यत पर आधारित होता है एवं इसके बहुविधापरक आयाम, इसका समन्वयशील पक्ष है। तुलनात्मक दृष्टि से अनुवाद का दो भाषाओं से संबंधित होना स्पष्ट होता है जिसमें भाषाओं की समानता–असमानता के प्रश्न उपस्थित होते हैं। पाठ संकेत विज्ञान के तीनों पक्ष अर्थ, विचार तथा संदर्भ मीमांसा अनुवाद के संदर्भ में प्रासांगिक हैं। अर्थविचार में भाषिक संकेत तथा भाषाबाह्य यथार्थ के बीच में संबंध का अध्ययन होता है।

संदर्भ मीमांसा के अन्तर्गत भाषा प्रयोग का उद्देश्यघ तथा संदेश के अर्थविचार में भाषिक संकेत तथा भाषा बाह्य यथार्थ के बीच में संबंध का अध्ययन होता है। संदर्भ मीमांसा के अन्तर्गत भाषा प्रयोग का उद्देश्यं तथा संदेश के प्रति वक्ता–श्रोता की अभिवृत्ति भाषा प्रयोग की भौतिक तथा माध्यम आदि की मीमांसा होती है। स्पष्ट है कि संकेत विज्ञान की परिधि भाषाविज्ञान की अपेक्षा व्यापक है तथा अनुवाद कार्य एक सम्प्रेषण व्यापार या प्रकृति में है, जैसे शत–प्रतिशत यथार्थ न होना यानि अपूर्ण अनुवाद इत्यादि। इसी से अनुवाद कार्य में शब्दानुवाद आज की वैश्विक आवश्यकता है। यह एक ही राष्ट्र के भिन्न–भाषी लोगों अथवा समुदायों के बीच संवाद का माध्यम है तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक सेतु एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को साकार करता है। यह निश्चय ही अनुवाद का सामाजिक और व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य है। अनुवाद का महत्त्व शैक्षिक और ज्ञानात्मक क्षेत्रों में इन क्षेत्रों के प्रसार और विस्तार के लिये होता है। यह अनुवाद का साधन रूप है। अनुवाद का साध्य रूप प्रायः साहित्यानुवाद में देखने को मिलता है।

**साहित्य साधन रूप में अनुवाद :–**

विश्व की किसी एक भाषा में उपलब्ध सूचना अथवा ज्ञानात्मक निष्कर्ष को दूसरी भाषा में पहुँचाना और लाना आज की बुनियादी ज़रूरत है। खासकर बीसवीं शताब्दी के अंतिम दौर में इसके कारण समूचा विश्व परस्पर निकटतम सम्पर्क में आया और भूमंडलीय ग्राम की अवधारणा सामने आई। वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी, वाणिज्यिक, आर्थिक और राजनीतिक सरोकार के मोर्चे पर हमारी सम्बद्धता गहन हुई। संवाद और सरोकार का यह क्षितिज निश्चय ही अनुवाद के साधन रूप को मजबूती से सामने लाता है। यों कहें तो अनुवाद राष्ट्र के उन्नयन का सबल एवं शक्तिशाली माध्यम है जिसकी धुरी पर संपूर्ण विश्व। का बाजार घूमता है और उसके परिधि में उपभोक्ता बाजार विद्यमान रहता है। भूमंडीकरण के दौर में अनुवाद एक महत्व्र उपूर्ण साधन के रूप में सिद्ध हुआ। बाजारवाद के प्रभाव से भाषा साहित्य के विस्तांर में नई गति मिली है। इसलिए वैज्ञानिक प्रगति की सूचना आमजन तक पहुँचाने में अनुवाद ही सबसे अधिक सशक्त शक्तिशाली साधन के रूप प्रयुक्त हो रही है। इसका माध्यम जनसंचार, इंटरनेट, लोकप्रिय वैज्ञानिक साहित्य एवं घरेलु उत्पाएदों का विवरणिका इत्यादि रहा है।

**साहित्य साध्य के रूप में अनुवाद :–**

''ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद अपने आप में साध्य है। डार्विन का विकासवाद हो या मार्क्स के साम्यवादी विचार, फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक निष्कर्ष हों या महात्मा गांधी का सत्याग्रह–ये राष्ट्र की सीमा को लांघकर समूचे मानव समुदाय को आंदोलित और आलोड़ित करने वाले साबित हुए हैं जो कि अनुवाद की महिमा के कारण है। दर्शन, विज्ञान, विचारधारा और साहित्य क्षेत्र की श्रेष्ठ उपलब्धियों को एक भाषा की सीमा से बाहर लाकर उसे सार्वदेशिक और सार्वजीन बनाना ज्ञान–क्षेत्र की सहज और स्वाभाविक गतिविधि होती है जो अनुवाद का साध्य रूप है।''[19] अनुवाद के प्रति निष्ठावान लोग बहुत पहले से होते आ रहे हैं, आज भी हैं और आगे आने वाले दिनों में भी होंगे। भले ही इस क्षेत्र में मनोयोग से काम करने वाले कम होते हैं। सच यह है कि अनुवाद करना अथवा अनुवादक बनना कहीं से भी दोयम श्रेणी की प्रतिभा का कार्य नहीं है। यह तथ्य अब सिद्ध हो चुका है।

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है और इस युग की गाड़ी के दो पहिए हैं– एक अनुवाद और दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकी। ज्ञान–विज्ञान और वाणिज्य–उद्योग के व्यापक क्षेत्र में सूचना का समूचा संवहन केवल एक भाषा में असम्भव है। अनुवाद साधन और साध्य–दोनों रूपों में विश्व की बहुभाषिक संस्कृति को संबल दे रहा है। मानव समाज को उन्नत बना रहा है। अनुवाद कार्य अपने–आप में एक ध्येय है, एक कार्यक्षेत्र है। अनुवाद का प्रयोजन पटल बहुत ही विस्तृत हो गया है। भूमंडलीकरण के युग में अनुवाद कार्य विकास कार्य की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। हमें अनुवाद के विभिन्न प्ररिपेक्ष्य एवं प्रयोजन की जानकारी होनी चाहिए। अनुवाद विश्व साहित्य की समृद्धि एवं विश्व प्रगति का वाहक है।

**सामान्य अनुवाद की प्रक्रिया और मानक प्रविधि :–**

डॉ. भोलानाथ तिवारी अनुवाद के प्रक्रिया को पाँच चरणों में विभाजित करते हैं। वे हैं :–

1. **पाठ–पठन :–** पहला चरण अनूद्य सामग्री को पढ़ना और अनुशीलन करना साथ ही नई दृष्टि से भाषिक भाव को समझना।
2. **पाठ–विश्लेषण :–** दूसरे चरण में अनुवाद की दृष्टि से पाठ का विश्लेकषण करना।

**भाषांतरण :–** तीसरे चरण में दूसरे चरण के पाठ–विश्लेषण के आधार पर विभक्त स्रोत–भाषा की इकाईयों का

लक्ष्य–भाषा इकाईयों में अंतरण करना।

**समायोजन :–** चौथे चरण में अंतरित पाठ का लक्ष्य भाषा ही भाषा की दृष्टि से समायोजन करना।

**मूल से तुलना :–** अनुवादक को चौथे चरण में जाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझते हैं। बल्कि मूल से तुलना अवश्य करना।''[28]

**अनुवाद मानक प्रक्रिया और चरण का तात्पर्य :–**

अनुवाद कार्य को प्रारंभ करने के लिए एक निश्चित प्रकार की प्रक्रिया और प्रविधि से गुजरना पड़ता है। अनुवाद कार्य विभिन्न चरणों में संपन्न होता है। इसलिए अनुवाद की प्रकिया का प्रत्येक चरण का विस्तृत विवरण और विश्लेषण अति आवश्यक हो जाता है। प्राचीन समय में गुरु जो कुछ अपने शिष्यों के समक्ष कहते थे, शिष्य उसे दोहराते थे, इस विधा को अनुवाद कहा जाता था। कालांतर में जैसे–जैसे नई–नई खोजें हुईं, नए–नए विषय उभरे और अनुवाद शब्द का भी विस्तार हुआ और इसे दो भाषाओं में सेतु के रूप में देखा जाने लगा। अनेकों भाषाओं में इसे अलग–अलग नामों से जाना जाने लगा यथा तजुर्मा, उल्था, टीका तथा भाषांतरण आदि। अनेक विद्वानों ने इसकी अलग–अलग परिभाषाएं दीं परंतु सभी परिभाषाओं का एक ही निष्कर्ष है, एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में अंतरित करने को अनुवाद कहते हैं परंतु ऐसा करते समय दोनों भाषाओं की भाषागत विशेषताओं का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अनुवाद की इस विधा को करने की एक विशिष्ट प्रक्रिया होती है।

**संक्षेप में अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख सोपान :–**

(1) स्रोत भाषा के भाव या विचार को लक्ष्य भाषा में यथा संभव उसके मूल रूप में लाना।

(2) स्रोत भाषा की अभिव्यंजना–शैली (संरचना–विधि) के यथासंभव समान (या अधिक–से–अधिक) अभिव्यक्ति पद्धति का प्रयोग लक्ष्य भाषा में भी करना।

(3) स्रोत भाषा के कथ्य (संदेश प्रयोजन) को यथासंभव अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास करते हुए भी कथन–भंगिमा और अभिव्यंजना–प्रवाह में लक्ष्य भाषा की निजी परंपरा एवं प्रकृति की अनुरूपता का ध्यान रखना। उदाहरणतः अंग्रेजी में मिलियन (Million), बिलियन (Billion) आदि संख्याओं का हिंदी अनुवाद करते समय लाख, करोड़ आदि का प्रयोग उचित होता है।

**पाठबोधन और पाठ का अध्ययन :–** अनुवाद करने से पूर्व पाठ्य वस्तु (Text) को सावधानी पूर्वक पढ़ा जाना चाहिए। स्रोत भाषा की अपनी भाषिक संरचना सांस्कृतिक विशेषता, शैली, व्याकरण तथा भाषा सौष्ठव होता है। अतः अनुवादक द्वारा पाठयवस्तु को उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर ही पढ़ना चाहिए। कई बार लेखक, टंकक या मिलानकर्ता द्वारा वाक्य में कुछ छूट भी जाता है या मात्राएं कुछ अलग ही अर्थ प्रकट करने लगती हैं :–

**उदाहरण :–** A badminton tournament was organized in the flood hit stadium. सामान्यतः मैच दिन या रात में organised होते हैं। रात में रोशनी की व्यवस्था की जाती है। इसीलिए यहाँ पर flood hit शब्द है न कि floodhit । यह शब्द गलती से floodhit हो गया है और यदि इसे सावधानी से नहीं पढ़ा जाएगा तो इसका अनुवाद रोशनी युक्त स्टेडियम के स्थान पर बाढ़ग्रस्त स्टेडियम पढ़ा जाएगा जो कि सही नहीं होगा।

**सार्थक भाव की समझ और अर्थग्रहण –** पाठ्य वस्तु को सावधानी पूर्वक पढ़ने के बाद अर्थग्रहण करना चाहिए। अर्थ ग्रहण करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया जाए :–

1. **व्याकरण :–** व्याकरण भाषा साहित्य को मानक रूप देता है। व्याकरण के विभिन्न घटकों को देखते हुए

अर्थग्रहण किया जाना चाहिए। शब्द वाक्य में प्रयोग होने के बाद लिंग, वचन क्रिया, संज्ञा विशेषण के अनुरूप अपना अर्थ देता है।

**उदाहरण–** 1. A stone on the road. यहाँ stone संज्ञा है।

2. Did you stone him. यहाँ stone क्रिया है।

3. A is stone deaf. यहाँ stone विशेषण है।

**2. शब्दकोश और पारिभाषिक शब्दावली :–** अनुवाद कार्य के सबसे उपयोगी अनुवाद उपकरण होता है अनुवादक के लिए शब्दकोश एक बाइबिल होता है। यह महत्त्वपूर्ण उपकरण या औजार होते हैं जो अनुवाद कार्य में हमेशा मददगार होता है। शब्दकोश विभिन्न प्रकार के होते हैं। अनुवादक स्रोतभाषा एवं लक्ष्य भाषा के अनुसार शब्द कोश का चयन करता है और उसका प्रयोग करता है। अनुवादक के हर संकट एवं चुनौती का समाधान शब्दकोश करता है इसलिए इसे अनुवादक का बाइबिल कहा जाता है। अनुवाद कार्य करते समय अनुवादक का महत्त्वपूर्ण उपकरण उसका विभिन्न प्रकार द्विभाषी शब्दकोश, शब्दावली, एवं थिसारस होता है। अनुवादक स्रोत सामग्री एवं लक्ष्य भाषा के आधार पर शब्द कोश, पारिभाषिक शब्दावली, विश्वकोश, महाकोश, ई–कोश आदि का मदद लेता है। इस प्रकार अनुवादक द्वारा शब्दों का अर्थ जानने एवं समझने के लिए शब्दकोशों की सहायता ली जाती है। विषय के अनुसार ही शब्दकोश का चयन किया जाना चाहिए। यदि प्रशासनिक सामग्री है तो ऐसी स्थिति में प्रशासन शब्दावली यदि इंजीनियरी, विज्ञान, तकनीकी, मानविकी, रक्षा, तकनीकी, न्याय, कला की सामग्री है तो तदनुसार संबंधित शब्दावली देखी जानी चाहिए। शब्दावली देखते समय शब्द की क्रिया, संज्ञा विशेषण रूप को देखा जाना चाहिए। कई बार क्रिया का अन्य रूप शब्दकोश में नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में विशेष सावधानी बरती जाए। उदाहरण– Ground Chilli हम अगर शब्दकोश देखेंगे तो Ground शब्द के लिए भू, पृथ्वी, जमीन, धरा आदि पर्याय मिलेंगे। यहाँ Grind शब्द का Past Participle form होता है ground और इसका अर्थ है– पिसी हुई मिर्ची होगा।

**3. उपमान :–** भाषा को अलंकारिक बनाने के लिए कई बार उपमानों का भी प्रयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में ऐसे उपमानों का तदनुसार ही अर्थ ग्रहण किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए अनुरक्षण विभाग का श्री.....गधा है। यहाँ इसका अनुवाद donkey नहीं होगा– अर्थात dull होगा। इसी प्रकार उल्लू है का अर्थ मूर्ख है, परंतु यह भी सावधानी बरती जाए जहाँ भारत में उल्लू का अभिप्राय मूर्ख है वहीं जापान में उल्लू का अर्थ समझदार है।

4. बहुत से उक्तियाँ विद्वत जनों के द्वारा दी जाती हैं और उन्हे मात्र खोजे जाने की आवश्यकता है जैसे सत्यं, शिवं, सुंदरम् का अनुवाद है– The Truth, The God, The Beauty Ground इस प्रकार Saluting my country वंदेमातरम् Truth prevails ever–सत्यमेव जयते संविधान के कुछ शब्द जैसे– Sovereign Democratic संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न समाजवादी लोकतांत्रिक गणराज्य आदि।

**5. अन्य पद से सान्निध्य :–**

पद के साथ शब्द के संबंध के अनुरूप अर्थ ग्रहण किया जाता है। जैसे– Leave is granted –छुटटी मंजूर की जाती है। Advance is sanctioned. अग्रिम मंजूर किया जाता है। The proposal is accepted –प्रस्ताव

मंजूर किया जाता है। यहाँ पर leave के साथ granted, Advances के साथ sanctioned तथा Proposal के साथ Accepted के अनुसार ही शब्द चयन किया गया है।

6. **प्रोक्ति :–** प्रोक्ति संप्रेष्य और संप्रेषण की अंतर्निहित आवश्यकता साधने वाली वाक्योपरि इकाई है। सप्पूर ने इसे discourse कहा। उन्होंने बताया कि Language is not a system of speaking but talking इसी बातचीत को उन्होंने प्रोक्ति का नाम दिया। अतः प्रोक्ति को संप्रेषण की पूर्ण इकाई मानते कुछ ही अनुवाद दिया जाना चाहिए।

7. **विश्लेषण :–** अर्थ ग्रहण करने के पश्चात पाठ्य वस्तु को देश, काल, परिस्थिति, विषय संदर्भ को देखते हुए विश्लेषण किया जाना चाहिए– विश्लेषण में वाक्य संरचना– अर्थात Active को Passive में Passive को Active, Compound, complex sentence, single sentence शब्दावली, भाषा सौष्ठव आदि घटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन और समीक्षात्मक किया जाना चाहिए।

**उदाहरण–** Family headed by, Team headed by, Rally headed by, Organisation headed by.

1. रिपोर्ट कल भेजी जाएगी

   Report will be send tomorrow

2. इसे कल तैयार कर लिया गया था।

   This has been prepared yestday itself.

यहाँ पहले वाक्य का कल – Tomorrow दूसरे वाक्य का कल–yesterday है। उसी प्रकार एक समय में अनुसंधान का अभिप्राय सुध बुध था जबकि आज इसका अर्थ खोज है।

9. **परिस्थिति और परिवेश –** पानी को जब अनुष्ठान के लिए उपयोग में लाया जाता है तो वह जल बन जाता है परंतु यही जब पौधों में सींचने के लिए उपयोग में लाया जाता है तो यह पानी कहलाता है परंतु जब आंखों से बहता है तो आंसू कहलाता है। यहीं जब प्रातःकाल गुलाब को पंखुड़ियां के ऊपर चमकता है तो शबनम कहलाता है।

10. **संदर्भ :–** तकनीकी क्षेत्र में Plant संयंत्र है जबकि वनस्पति विज्ञान में Plant का अर्थ पौधा है। चिकित्सा में Treatment–उपचार है। तथा आम बोलचाल में Treatment – व्यवहार है।

11. **प्रसंग :–** कुर्सी–एक आम वस्तु chair है परंतु कुर्सी की लड़ाई– Post है।

**भाषांतरण :–**

अर्थग्रहण तथा विश्लेषण के बाद अनुवादक को भाषांतरण करना चाहिए। स्रोत भाषा से लक्ष्य में भाषांतरण करते समय भी लक्ष्य भाषा के विभिन्न विराम चिह्न वर्तनी संबधी उक्तियों आदि को देखा जाता है। भाषांतरण करते समय यह भी देखा जाना चाहिए कि यदि स्रोत भाषा में कहीं शीर्षक या कुछ रेखांकित पदों को (underline) किया गया तो लक्ष्य भाषा में भी यह किया जाना चाहिए।

**समायोजन :–**

भाषांतरण हो जाने के बाद समायोजन किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम स्रोत भाषा की पाठ्य वस्तु के साथ लक्ष्य भाषा की पाठ्य वस्तु को मिलान कर लिया जाता है तथा यह देखा जाता है कि कोई शब्द या वाक्य या

आंकड़ा या तथ्य छूट तो नहीं गया है। यदि छूट गया है तो उसे लक्ष्य भाषा में उस स्थान पर जोड़ा जाना चाहिए।

**पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन :–**

यह अनुवाद प्रक्रिया का अंतिम चरण होता है जिसमें समस्त अनूदित सामग्री को एक बार बहुत ही सावधानीपूर्वक पढ़ा जाना चाहिए तथा यह देखा जाना चाहिए कि कहीं अर्थ का अनर्थ तो नहीं हुआ है या कहीं अनुवाद में किसी बात को स्रोतभाषा की तुलना में कम शब्दों में काम पूर्ण रूप से व्यक्त किया जा सकता हो या कहीं किसी शब्द, पद, वाक्यम की लक्ष्य भाषा है और अधिक स्पष्ट करने के लिए उसे आवश्यकता पड़ने पर एक से अधिक वाक्यों में लिखा जा सकता है। उदाहरण के लिए यह वाक्य–राबड़ी देवी को सोनिया गांधी जी द्वारा मुख्यमंत्री बनने पर बधाई दी गई। उपर्युक्त वाक्य, लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल नहीं है।

अतः लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल ही इस वाक्य को बनाया जाना चाहिए अर्थात सोनिया गांधी ने राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बनने पर बधाई दी। अर्थात पुनरीक्षण करते समय सभी तथ्यों यथा शब्द चयन, भाषा प्रकृति, शैली, भाषा सौष्ठव आदि शब्दो, घटकों की दृष्टि से अनूदित सामग्री का पुनरीक्षण किया जाना चाहिए। वास्तव में अनुवाद में पहला कर्म–पुरुष अनुवादक है और उसका परिष्कार देनेवाला दूसरा कर्म–पुरुष पुनरीक्षक है। यदि संभव हो तो तीसरा कर्म–पुरुष मूल्यांवकक भी पृथक ही होना चाहिए ताकि वह मूल तथा अनूदित का तुलनात्मिक अध्यतयन करते हुए उचित–अनुचित एवं ग्राह्य या अग्राह्य का निर्णय भी कर सके। परंतु भारत में अनुवादक ही सर्वज्ञ होता है। वह पुनरीक्षक भी होता है और अपेक्षा अनुसार मूल्यांकक भी। यह कदापि उचित नहीं, पर स्थिति यही है। सामान्यषतः होता यह है कि दो अनुवादक यदि है तो एक का अनुवाद दूसरे के पास पुनरीक्षण हेतु भेजा जाता है।

यहाँ पुनरीक्षण से निष्ठा, समर्पण और तटस्थहता की अपेक्षा रहती है। पुनरीक्षक सोचता है कि 'पड़ोसियों के बच्चों की देखभाल' भला मैं क्यों करूं? जबकि वह यह नहीं सोचता है कि यदि वह ऐसा करेगा तो वह सामान्य न रहकर विशिष्ट एवं स्तुथत्यर हो जाएगा। यदि अनुवाद या पुनरीक्षक से संतुष्टि नहीं मिलती तो समझिए कहीं कोई कमी–त्रुटि है। एक अन्यए उदाहरण देखिए

"P V Narsimha Rao has gone again into a stage of Unconsciousness."

अंग्रेजी की प्रवृति के हिसाब से यह ठीक हो सकता है। फिर यह भी क्यो जरूरी है कि अंग्रेजी ठीक ही लिखी गई है? अनुवादक बेचारा 'मक्षिका स्था ने मक्षिका' या 'ना कुछ छोड़ो ना जोड़ो का मूल मंत्र लिए, 'अंध अनुवादक' बन जाता है। इस कारण वह इस वाक्य का अनुवाद कर देता है– ''पी.वी नरसिम्हा राव फिर बेहोशी की हालत में चले गए'' क्या उपयुक्त अनुवाद से ऐसा नहीं लग रहा कि पी. वी. नरसिम्हा राव उठे और जान–बूझकर बेहोशी की हालत में चले गए हो। जैसे कोई एक कमरे से दूसरे कमरे में चला गया उसी तरह से वे उठकर बेहोशी में चले गए हों। अतः सही अनुवाद होना चाहिए था 'पी.वी. नरसिम्हा राव फिर बेहोश हो गए।'

**आदर्श अनुवाद पुनरीक्षक के गुण :–**

पुनरीक्षक तथा मूल्यांकनकर्ता को समीक्षक एवं संपादक की दृष्टि से अनूदित पाठ की जांच परख करनी होती है। पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित है कि वह मानक अनुवाद कार्य को सुनिश्चित करने हेतु निम्नलिखित

दायित्व को निभाते है :–

(1) पुनरीक्षक को स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा में दक्ष तथा निपुण होना आवश्यक है।

(2) उसे धैर्यवान, समर्पित एवं निष्ठावान होना चाहिए ताकि वह जनहित के कार्य के साथ पूरा न्याय कर सके। उसमें तटस्थता और निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। ताकि वह अनुवादक का पूरक बन सके।

(3) अनुवादक की शैली की गंध को अनूदित पाठ में समाहित होने से यथा संभव रोकना चाहिए और अपनी गंध को भी रोकने का सार्थक प्रयास करना चाहिए।

(4) पुनरीक्षक, वास्तविक संशोधक एवं संपादक बनकर अनुवाद को निखारने तथा परिष्कृत करने वाला होना चाहिए।

(5) पुनरीक्षण के पश्चारत उस सामग्री का अपेक्षा तथा आवश्यकता के अनुसार तटस्थ मूल्यांकन भी करना अथवा करवाना चाहिए। उसे देखना चाहिए कि लेखक का मूल कथ्य क्या है? वह उस कथ्य को किस शैली में प्रस्तुत कर रहा है और क्यों? उसकी रचना का कुल प्रभाव क्या है? और उसे अनुवाद में कैसे उतारा जा सकता है?

(6) उसे स्पष्ट एवं संदिग्ध संकल्पकनाओं का निवारण कर उन्हें स्पष्ट, बोधगम्यक एवं असंदिग्ध बनाने का हर संभव प्रयास भी करना चाहिए।

(7) वाक्यों की अन्विति, अवतरणों की संरचना, सुपाठ्यता, भाषा का भावानुकूलन, विचार–प्रवहन तथा भाव–प्रवणता आदि के संबंध पुनरीक्षक से पूर्णतः जागरूकता की अपेक्षा रहती है।

उससे 'गिद्ध दृष्टि' से मूल तथा अनुवाद के संदर्भ में पूरी तरह से सचेत एवं सजग रहना अपेक्षित है।

**प्रूफ रीडिंग :–**

अनुवादक का कार्य अनुवाद सम्पन्न हो जाने पर ही पूरा नहीं हो जाता, अनुवाद हो जाने के बाद भी कुछ सामग्री प्रकाशन/मुद्रण हेतु भेज दी जाती है, अतः मुद्रण या प्रकाशन की इस प्रक्रिया में पहला चरण प्रूफ रीडिंग होता है। अतः अनुवादक को प्रूफ रीडिंग के विषय में भी पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। प्रूफ रीडिंग का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण प्रूफ शोधन में अधिक समय लगता है और मुद्रक भी आपके संशोधनों को नहीं समझ पाता है। अतः प्रूफ शोधन संबंधी जानकारी प्रत्येक व्यक्ति के लिए जरूरी है। अनुवादक के लिए तो यह परम आवश्यक है।

**परिभाषा :–**

किसी भी साहित्य का प्रकाशन के पहले वह प्रूफ रीडिंग प्रक्रिया से गुजरता है जिससे साहित्य परिमार्जित एवं मानक रूप ग्रहण करता है। इस प्रक्रिया में व्यवहारिक, तथ्यात्महक एवं वर्तनी पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

डॉ. जे. पी. नौटियाल के अनुसार "प्रूफ रीडिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कच्चे कागज पर मुद्रण से पहले जाँच हेतु निकाली गई छपी सामग्री की एक छाप को सुधार करने हेतु पढ़ा और सुधारा जाता है।"[29]

उक्त परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रूफ रीडिंग का मुख्य उद्देश्य है त्रुटियों का सुधार। प्रूफ रीडिंग की कुछ अपनी विशेष शब्दावली होती है इसकी जानकारी प्राप्त करना नितांत आवश्यक है। अनुवाद और प्रूफ रीडिंग दोनों में एक समानता यह भी है कि दोनों में ही अत्यधिक सावधानी बरतनी पड़ती है जरा–सी नजर चूकते ही या ध्यान बंटते ही त्रुटि हो जाती है। अतः दोनों ही कार्यों को करते समय एकाग्रचित होना प्रथम आवश्यकता है। अनुवाद के संबंध में हम संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रूफ रीडिंग को हम दो भागों में विभाजित करके इसका अध्ययन प्रस्तुत करेंगे। प्रूफ रीडिंग के दो भाग इस प्रकार हैं :–

1. प्रूफ रीडिंग का सैद्धान्तिक पक्ष, 2. प्रूफ रीडिंग का व्यावहारिक पक्ष।

**सैद्धान्तिक पक्ष :–**

प्रूफ रीडिंग के सैद्धान्तिक पक्ष में हम प्रूफ रीडिंग से संबन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण संकल्पनाओं का उल्लेख किया गया है।'' प्रूफ रीडिंग का अर्थ : (1) प्रूफ का अर्थ विभिन्न शब्दकोशों के अनुवाद निम्नवत हैं : The concise Oxford Dictionary के अनुसार – Trial Impression taken from typ or film (Page 825) Chambers English Hindi Dictionary के अनुसार – प्रूफ रीडिंग प्रूफ शोधन है।''[2]

अर्थात् प्रूफ एक ऐसा कागज है, जो मुख्य पाठ के मुद्रण से पूर्व जाँच हेतु निकाला जाता है ताकि इसकी अशुद्धियों में सुधार किया जा सके इस सुधार की प्रक्रिया को ही प्रूफ रीडिंग कहते। प्रूफ दो प्रकार का होता है

**1. मशीन प्रूफ :–**

इसमें व्याकरणिक दोष एवं वर्तनी को सुधारा जाता है। यह सुधारा गया अंतिम चरण का प्रूफ होता है, जिसे मशीन में मुद्रण हेतु भेजने से पहले निकाला जाता है। यह प्रूफ बहुत ही उपयोगी होता है।

**2 प्रेस प्रूफ :–**

यह अंतिम प्रूफ होता है। इसमें सभी स्तरों पर किए गए संशोधन शामिल होते हैं।

**व्यावहारिक पक्ष :–**

प्रूफ रीडिंग करते समय हमें अनेक चिह्नों, शब्दावलियों का प्रयोग करना पड़ता है। ये शब्दावलियाँ प्रायः सभी भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होती हैं। परंतु कुछ शब्दावलियाँ सिर्फ अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त होती हैं, जैसे – Capital Letters या Small Letters जैसी संकल्पना केवल रोमन लिपि अर्थन अंग्रेजी या रोमन लिपि में लिखी जाने वाली भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं। प्रूफ शोधन हेतु चिह्न सामग्री में लगाए जाते हैं तथा उसका विवरण मार्जिन में लिखा जाता है। प्रूफ रीडिंग करने का एक मानक तरीका होता जिसके अनुपालन से पाठ या साहित्य परिमार्जित हो जाता है। इसके भाषा विज्ञान का ज्ञान अवश्य होनी चाहिए साथ मानक वर्तनी की जानकारी होनी चाहिए। इस प्रकार प्रूफ रीडिंग के द्वारा लिखित साहित्य स्तरीय रूप ग्रहण करता है।

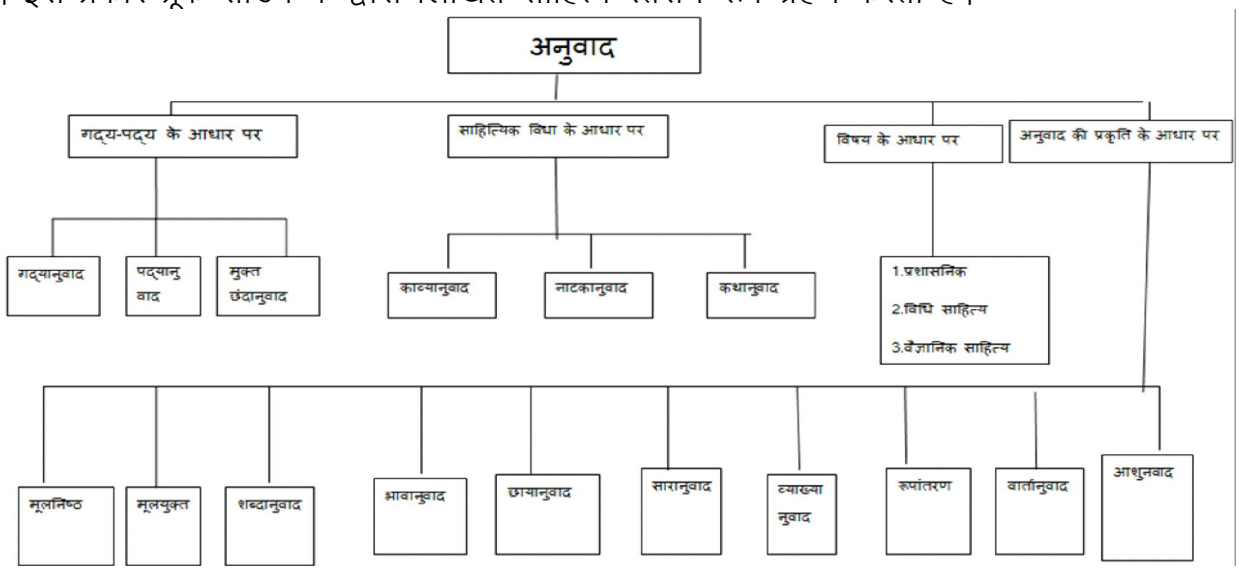

एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथा संभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। अनुवाद की अवधारणा के माध्यम से हमें अनुवाद के संपूर्ण परिप्रेक्ष्य की जानकारी मिलती है। अनुवाद में भाषाई पारस्परिकता दरअसल अंतरभाषिक होता है। यह कथन के भाषिक रूपांतरण के रूप में। इसी वजह से अनुवाद को भाषाओं का संवाद कहा जाता है।

अनुवाद पर डॉ. पूरनचंद टंडन ने गंभीरता से विचार किया है – "अनुवाद उपकार भी है तो उपहार भी। उपासना भी है तो साधना भी। ऊर्जा भी है। तो ऋजुता भी। एकाग्रचित्त होने या बनने का मार्ग भी है तो कर्मठता और कर्तव्यपरायणता की प्रतिबद्धता भी। गांभीर्ययुक्त अनुशासन भी है तो चिंतनशील विधा भी। जिज्ञासा को समाप्त और शांत करने का साधन भी है तो विषय एवं भाषागत दक्षता प्रदान करने वाला गुरु भी। दूरदर्शिता का झरोखा भी है अनुवाद तो दृढ़प्रतिज्ञा होकर लक्ष्य साधन की शक्ति भी। उपकृत करने की शिक्षा भी है अनुवाद तो 'धैर्य, ध्यान और ध्येय' प्राप्ति का मार्ग भी है अनुवाद। नवीनता और निमग्नता का संगम भी है, अनुवाद तो निष्ठा, परिश्रम, परहित, पुरुषार्थ, प्रज्ञा और प्रतिभा–प्रतिष्ठा का काम भी है अनुवाद।"[2] आज विश्व के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जो उथल–पुथल है, उसका सार्थक निराकरण अनुवाद है। लेकिन अनुवाद की गरिमा और सार्वभौमिक प्रतिष्ठा का आंकलन करने के लिए अनुवादक को भाषाई विकसन–शीलता के लिए एक अमिट साक्ष्य बन जाता है। अनुप्रयुक्त पक्ष (applied aspect of evolutionness of Language) पर अधिक ध्यान देना चाहिए। इस बदलते समाज में प्रत्येक दिन नई–नई संकल्पनाओं का विकास हो रहा है और उन संकल्पनाओं के तदनुकूल नए–नए शब्दों का निर्माण स्वतः हो रहा है। इतिहास के पटल पर होने वाली घटनाएं भी कभी–कभी ऐसे ऐतिहासिक क्षणों को लिखकर चली जाती हैं जो सदा–सदा अमेरिका के 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर' की और 'मुंबई' में आतंकवादियों की क्रमशः 11 सितंबर, 2001 और 26 नवम्बर, 2008 की घटनाएं विश्व इतिहास में सदैव के लिए एक दुःखद अध्याय बन कर रह जाती है। आज 9/11 और 26/11 कहने मात्र से ही प्रत्येक व्यक्ति के सामने एक ऐसा चित्र उपस्थित हो जाता है जिसका अनुवाद शब्दों के माध्यम से तो कभी किया ही नहीं जा सकता है।

मानव जीवन पर त्रासदी या घटनाओं के प्रभावों एवं भावनाओं का अनुवाद करना अनुवादक के लिए कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है। इस संबंध में अंग्रेजी–हिंदी ही नहीं विश्व की किसी भी भाषा में अनुवाद असाध्य है। अनुवादक के समक्ष इन दो घटनाओं के अनुवाद के लिए कोई शब्द नहीं है। वैसे अंग्रेजी की एक उक्ति इस संबंध में अत्यंत सार्थक सिद्ध होती है– अनुवाद कार्य में अनुवादक अपने कोश की सहायता से आगे बढ़ता है, लेकिन कोशविज्ञान (Lexicology) पर अध्ययन करने वाले विद्वानों ने कभी सोचा या कल्पना भी न की होगी कि अंक भी कभी शब्द बन पाएंगे।

वस्तुतः ये शब्द क्या, पूरी तरह से प्रोक्ति ही हैं। प्रशासन में नित नई–नई योजनाओं और नियमों का समावेशन हो रहा है। Language is a poor substitute of thoughts. अनुवादक को इनके अनुवाद के प्रति भी सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। अर्थात विश्व की भाषाओं में अनेक विकसनशील घटकों का निर्माण हो रहा है। साहित्य निर्माण में इन घटकों का योगदान अप्रतिम है। विश्व की भाषाओं में इन्हीं विकसनशील घटकों के आधार पर अनुवाद कार्य निरंतर बढ़ता जा रहा है।

निष्कर्ष के रूप कहा जा सकता है कि अनुवाद प्रक्रिया का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य पुनरीक्षण और मूल्यांकन होता है।

**संदर्भ :-**


1. डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल – अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार, पृ० 96, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2006
2. डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल – अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार, पृ० 96, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2006
3. जयंती प्रसाद नौटियाल, अनुवाद – सिद्धान्त एवं व्यवहार, पृ० 67, राधाकृष्ण प्रकाशन, सं० 2006
4. जी. गोपीना अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, पृष्ठव सं 9, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1985
5. हंसा– अरुण कुमार झा, नौवा अंक, 2012–13, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापन पृष्ठ–40
6. अनुवाद, अंक 143–144, अनूदित फारसी साहित्य विशेषांक (मानव संस्कृति और उसकी आत्मा का प्रकाशक : फारसी अनुवाद, पृष्ठ–42)

संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 11, Issue 11-12
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 25-29

# वैश्वीकरण दौर में भारतीय शिक्षा और भूगोल शिक्षण

**डॉ. नटवर तेली**
सहायक आचार्य, संजीवनी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर।

**सारांश :–**

वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिससे वर्तमान में कोई भी क्षेत्र नहीं बच पाया है, चाहे वो आर्थिक हो, सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो या तकनीकी का क्षेत्र हो। फ़िर शिक्षा का क्षेत्र इस से कैसे बच पाता? लगातार शिक्षा में परिवर्तन हो रहे हैं, इन परिवर्तनों ने भूगोल शिक्षण में कई आधारभूत बदलाव किये हैं। जैसे नवीन तकनीकी का प्रयोग, नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग, वैश्विक समझ विकसित करने वाली विषय वस्तु का समावेश के साथ साथ वैश्विक भागिदारी के लिये तैयार करने के प्रयासों को को प्राथमिकता मिली है।

**की वर्ड :–** वैश्वीकरण, भारतीय शिक्षा, भूगोल शिक्षण।

**भारतीय शिक्षा में वैश्वीकरण :–**

शिक्षा की किसी भी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में भूमिका असंदिग्ध है। क्योंकि विकास की वर्तमान और भावी संभावनायें मानव संसाधन के विकास पर निर्भर है तथा मानव संसाधन का विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। विकसित देशों ने इसीलिये शिक्षा पर प्राथमिकता से ध्यान दिया। भारत में भी आजादी से पहले और बाद में विभिन्न आयोग और समितियों ने शिक्षा पर विचारणीय कार्य किया है। आजादी से पहले की बात करें तो मैकाले का विवरण पत्र, वुड घोषणा पत्र, भारतीय शिक्षा आयोग, विश्वविद्यालय आयोग, सैडलर आयोग, हार्टोंग आयोग, वुड एबट समिति, सार्जेंट प्रतिवेदन आदि समितियों ने शिक्षा पर महत्वपूर्ण कार्य किया।

स्वतंत्र भारत में भी शिक्षा में गतिशीलता बनाये रखने के लिये अनेक आयोग और समितियों का गठन किया गया। यथा समय शिक्षा नीतियाँ तथा योजनायें बनाई गई। ताराचन्द समिति, राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग, आचार्य नरेन्द्र देव समिति, श्रीमाली समिति, कोठारी आयोग, आचार्य राममूर्ति समिति, जनार्दन रेड्डी समिति, यशपाल समिति आदि का गठन किया गया। साथ ही विभिन्न आयोगों के सुझाव पर पूरे भारत में शिक्षा नीतियाँ लागू की गई। लेकिन देखा जाये तो 1991 के बाद भारत तथा विश्व के अन्य भागों में साम्यवादी व्यवस्था के समाप्त होने के बाद से ही बदलाव की शुरुआत होने लगी थी। इसी वजह से समाज की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियों में अचानक परिवर्तन आना शुरु हो गया। इन परिस्थितियों ने समाज को बदलना और प्रभावित करना शुरु कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि भारत में शिक्षा भी प्रभावित हुई, तथा इस का परिदृश्य बदलने लगा।

वास्तव में वैश्वीकरण आर्थिक घटनाओं से जुड़ी ऐसी प्रक्रिया है, जो भौगोलिक दूरियों को कम करने,

आपसी अन्तः क्रिया बढ़ाने तथा संपर्क की व्यवस्थाओं से संबंधित है। साथ ही यह विभिन्न समुदायों, राज्यों, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, गैर सरकारी संस्थाओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एक जाल है जो वैश्विक संपर्क बनाता है। दुनियाभर में सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है, चाहे वे सांस्कृतिक हो या आर्थिक, राजनीतिक या पर्यावरणीय हो। जाहिर है कि यह एकरूपता के पक्ष में और स्थानिकता के विरुद्ध है। आर्थिक पक्ष की जिस प्रधानता का यहाँ जिक्र किया गया है, वह शिक्षा को गहरे से प्रभावित कर रही है, जिससे ज्ञान प्राप्त करने, बच्चे के संपूर्ण विकास, सीखने, स्थानिकता जैसी धारणाएं हतोत्साहित होती है और शिक्षार्थियों के उपभोक्ता जैसी भूमिका में आने का खतरा पैदा हो जाता है। क्योंकि नब्बे के दशक में जो आर्थिक नीतियाँ लागू की गई उनसे सरकार ने अपने आप को कई जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया, तथा सरकार द्वारा संचालित होने वाले कई क्षेत्रों को बाजार के हवाले कर दिया। नतीजा यह हुआ कि शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की बाढ़ आ गई। यह बाढ़ सिर्फ़ शहरों तक ही सीमित नहीं रही, गांवों और कस्बों तक भी पहुंच गई। यानी शिक्षा का लक्ष्य मात्र तात्कालिक जरुरतें पूरी करने मात्र का साधन मान लिया गया है, जो किसी खास क्षेत्र में वेतनभोगी बना सकने योग्य बना सके। शिक्षा में रचनात्मकता, आलोचनात्मकता और संवाद क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को नजरअंदाज किया जाने लगा है। अतः यह कहा जाना कि भले ही हमने राजनीतिक आजादी प्राप्त कर ली हो, पर ज्ञान पर आज भी पश्चिमी सभ्यता का ही प्रभाव है। यही वजह रही है कि आज साहित्य, समाज, दर्शन, भाषा आदि की शिक्षा को बोझ माना जाने लगा है।

इन्ही चुनौतियों के मद्देनज़र शिक्षाविद अनिल सद्गोपाल ने 'शिक्षा में बदलाव का सवाल' में लिखा है "वह पाठ्यक्रम कैसा होगा जो हमें विश्व की विभिन्न धाराओं का सामना करने तथा उनसे कुछ सीख पाने के लिये इस प्रकार से सशक्त करे कि हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें? अभी तक हमने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के बुनियादी सिद्धान्तों पर सवाल उठाने की जुर्रत भी नहीं की है जो बुरी तरह विफ़ल हो चुकी है।" (सदगोपाल, 2009)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 में लिखा गया है कि "शिक्षा का उद्देश्य लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व अधिकार तथा दूसरे के प्रति आदर जैसे मूल्यों को प्राप्त करने के प्रति प्रतिबद्धता का निर्माण करना होना चाहिये।" (एनसीईआरटी, 2005) साथ ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 यह अनुसंशा करती है कि विद्यार्थी को बाहरी जीवन व स्थानीय पर्यावरण से जोड़ा जाये।

भारत विश्व में अपनी राष्ट्रीय आय में से शिक्षा पर खर्च करने वाले देशों की सूची में से काफ़ी पीछे है, जबकि हमारी सरकार अपनी कुल राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा हथियारों की खरीद पर खर्च करती है। यह एक जरुरी सवाल है कि शिक्षा पर खर्च होने वाला कोटा लगातार कम होता जा रहा है। इस का प्रभाव यह हुआ कि सरकारी संस्थाएँ बिखर गई, "जब हम शिक्षितों की बात करेंगे तो फ़िर हमें उन्हें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक में बांटना होगा, शोध में बांटना होगा। प्राथमिक शिक्षा एक तरफ़ सरकारी संस्थानों से प्राइवेट संस्थानों की तरफ़ लगातार रुख करती चली जा रही है, वहीं दूसरी तरफ़ लगातार महंगी होती चली जा रही है। एक जमाना था जब केवल सरकारी स्कूल हुआ करते थे, ट्रस्ट स्कूल हुआ करते थे और बहुत थोड़े निजी शिक्षण संस्थाओं तक चुनिंदा अमीरों के बच्चे पहुंच पाते थे। आज गरीब, किसान, मजदूर भी अपने बच्चे को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना चाहता है क्योंकि सरकारी शिक्षण संस्थाओं का स्तर लगातार गिरा है।" (मीणा, 2019)

भारत में शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता और सरकारी संसाधनों की सीमितता को ध्यान में रखते हुये

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग 2005 ने निजीकरण का समर्थन किया और कहा कि देश में शिक्षा के अवसरों का दायरा बढाने की आवश्यकता है तथा उसमें निजी निवेश को प्रोत्साहित किया जाना उचित है। "एक सवाल शिक्षा की उपादेयता का भी है। वर्तमान में बाजार और पूंजी के प्रभाव में शिक्षा डिग्री मात्र रह गई है। शिक्षित लोगों को न रोजगार उपलब्ध है और न समाज के विकास में कोई भूमिका। शिक्षा सामाजिक विकास का माध्यम तभी हो सकती है जब उसका सीखने से संबंध हो और पाठ्यक्रम समाजोन्मुखी हो। इसलिये शिक्षा की सामाजिक उपादेयता सुनिश्चित करनी होगी और हमें देश के विकास में शिक्षा को सहयोगी रूप में आगे लाना होगा।" (मीणा, 2019)

शिक्षा में सूचना प्रोद्योगिकी के प्रयोग से शिक्षा की परंपरागत प्रणाली को बहुत बदल के दिया। दुरस्थ शिक्षा का संप्रत्यय भी संभव हो पाया। इसके साथ–साथ शिक्षा की विषयवस्तु, दृष्टिकोण और अध्यापन की आवश्यकतायें भी बदली है। यही कारण है कि आज मानविकी विषयों से ज्यादा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है। शिक्षण विधियों में भी परिवर्तन आया। परंपरागत शिक्षण विधियों की जगह नवीन आधुनिक विधियों ने ले ली, स्व–अधिगम को प्रोत्साहित किया गया। ग्रुप डिस्कशन, सेमीनार, कोपरेटिव लर्निंग, वर्कशोप, ट्युटोरियल, ब्रेन स्टार्मिंग आदि का प्रयोग शिक्षा में किया जाने लगा।

**वैश्वीकरण और भूगोल शिक्षण :–**

भूगोल सामाजिक विज्ञान का विषय है और समाज का नजदीक से अध्ययन करता है। अतः नयी आर्थिक नीतियों के प्रभाव स्वरूप बदलते समाज के मद्देनजर यह विषय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में पाठ्यचर्या के स्वरूप के बारे में लिखा है कि "अपनी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय अस्मिता को सुदृढ करने के लिये पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिये कि वह युवा पीढी को इस के लिये सक्षम बना सके कि वह नई प्राथमिकताओं व बदलते सामाजिक संदर्भ मे उभरते दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में अतित का पुनर्मूल्यांकन कर पाएं।" (एनसीईआरटी, 2005) साथ ही एन.सी.एफ़. 2005 पाठ्यचर्या के क्षेत्र में एक युगांतकारी कदम उठाते हुए पाठ्यपुस्तकों को ज्ञान का एकमात्र स्रोत नहीं मान कर इन्हें सीखने के लिये सामग्री के रूप में प्रस्तावित करता है।

एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी महसूस करते हुए एन.सी.एफ़. 2005 यह मानता है कि "हम पर यह जिम्मेदारी आ गई है कि हम सारे बच्चों को जाति, धर्म संबंधी अन्तर, लिंग और असमर्थता संबंधी चुनौतियों से निरपेक्ष रहते हुए स्वास्थ्य, पोषण और समावेशी स्कूली माहौल मुहैया करायें जो उनको शिक्षा ग्रहण में मदद पहुँचाएँ तथा सशक्त बनाएँ।" (एनसीईआरटी, 2005) साथ ही एन.सी.एफ़. 2005 का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य 'शिक्षा बिना बोझ के' भी है, जिसे प्राप्त करने के लिये पाठ्यचर्या निर्माण के "पाँच निर्देशक सिद्धान्तों का प्रस्ताव रखा है–

– ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।
– पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
– पाठ्यचर्या का इस तरह से संवर्धन करना कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया कराये बजाय इसके कि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बन कर रह जाये।
– परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
– एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राजव्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिंतायें

समाहित हो।" (एनसीईआरटी, 2005)

भूगोल उन विषयों में से एक है जो एन.सी.एफ़. 2005 के उक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण है। मनुष्य और पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धों और इन सब के विकास के माध्यम से इस विषय में समाज का अध्ययन किया जाता है। यही कारण है कि आज भूगोल मात्र प्राकृतिक वातावरण या आर्थिक उपादानों के अध्ययन तक ही सीमित नहीं है अपितु इस का क्षेत्र अनेक गूढ़ विषयों जैसे– धर्म, औषध विज्ञान, जातियता, कला आदि को भी अपने में समाये हुए हैं। भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ है– भौतिक भूगोल और मानव भूगोल, लेकिन एक सामाजिक विज्ञान के रूप में देखा जाये तो भूगोल की "समाजशास्त्र से समाज भूगोल, प्रजाति विज्ञान से प्रजातीय भूगोल, अर्थशास्त्र से आर्थिक भूगोल, राजनीति विज्ञान से राजनीतिक भूगोल आदि भूगोल की प्रमुख भूगोल की उपशाखाएँ है जो व्यावहारिक जीवन से जुड़ी हुई है।" (शर्मा ह., 2018) आम तौर पर भूगोल का अर्थ मात्र उच्चावच, नदियाँ, जलवायु और मिट्टी के अध्ययन से लिया जाता है, जो संकीर्णता का द्योतक है। वास्तविकता तो यह है कि भूगोल एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें पृथ्वी के भौतिक वातावरण के साथ–साथ मानवीय क्रियाकलापों एवं उनके आपसी संबंधों का भी अध्ययन किया जाता है। प्राकृतिक संसाधन, तकनीकी विकास, भौतिक वातावरण आदि भी इसके अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित है।

पहले राजस्थान शिक्षा बोर्ड की भूगोल पाठ्यचर्या में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा निर्धारित का अध्ययन करवाया जाता था, जिसके तहत कक्षा 12 की पाठ्यपुस्तक 'भारत के लोग और अर्थव्यवस्था' में जनसंख्या, प्रवास, मानव विकास, मानव बस्तियाँ, भूसंसाधन, जल संसाधन, खनिज तथा ऊर्जा संसाधन, परिवहन तथा संचार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार आदि को स्थान दिया गया था। इसी कक्षा की 'मानव भूगोल के मूल सिद्धान्त' पाठ्यपुस्तक में मानव भूगोल की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र, विश्व जनसंख्या, जनसंख्या संगठन, मानव विकास, परिवहन, संचार एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयवस्तु को महत्व दिया गया था। साथ ही प्रयोगात्मक कार्यों में आंकड़े, आंकड़ों का संकलन, निरूपण, क्षेत्रीय सर्वेक्षण, कम्प्यूटर अनुप्रयोग एवं स्थानिक सूचना प्रौद्योगिकी को सम्मिलित किया गया था। कक्षा 11 में पाठ्यपुस्तक 'भारत भौतिक पर्यावरण' में भारत की स्थिति, संरचना तथा भूआकृति विज्ञान, अपवाह तंत्र, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मृदा, प्राकृतिक संकट, तथा आपदा प्रबंधन को संकलित किया गया था। 'भौतिक भूगोल के मूल सिद्धान्त' में पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास, आन्तरिक संरचना, महासागरों एवं महाद्वीपों का वितरण, खनिज एवं शैल, भू–आकृतिक प्रक्रियाएँ, भू–आकृतियाँ तथा उनका विकास, वायुमण्डल का संघठन तथा संरचना, सौर विकिरण, ऊष्मा संतुलन तथा तापमान, वायुमंण्डलीय परिसंचरण, मौसम प्रणालियाँ, वायुमण्डल में जल, विश्व की जलवायु एवं जलवायु परिवर्तन, महासागरीय जल तथा जल संचलन, पृथ्वी पर जीवन, जैव विविधता एवं संरक्षण से संबंधित विषयवस्तु सम्मिलित थी। प्रायोगिक कार्यों में मानचित्र का परिचय, मापनी, अक्षांश, देशांतर और समय, प्रक्षेप, स्थलाकृतिक मानचित्र, वायुफ़ोटो का परिचय, मौसम यंत्र तथा चार्ट की जानकारी थी।

वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की भूगोल पाठ्यचर्या में स्वयं बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का ही अध्ययन करवाया जा रहा है। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. चौधरी के अनुसार "पिछले कुछ वर्षों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में राजस्थान की भाषागत एवं सांस्कृतिक स्थितियों के प्रतिनिधित्व का अभाव महसूस किया जा रहा था, इसे दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों

के लिये माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा अपना पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अनुरूप बोर्ड द्वारा शिक्षण सत्र 2016–17 से कक्षा 9 व 11 तथा सत्र 2017–18 से कक्षा 10 व 12 की पाठ्यपुस्तकें बोर्ड के निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार कराई गई हैं।" अतः पिछले कुछ अकादमिक सत्रों से कक्षा 12 की भूगोल पाठ्यपुस्तक के खण्ड–अ 'मानव भूगोल के मूल तत्व' में मानव भूगोल का परिचय, विश्व की जनसंख्या, विश्व में मानव अधिवास, विश्व में मानव व्यवसाय, विश्व मंर परिवहन व संचार एवं व्यापार, पर्यावरण तथा मानचित्र कार्य सम्मिलित है। इसी तरह खण्ड– ब 'भारत जनसंख्या एवं अर्थव्यवस्था' में भारत जनसंख्या, संसाधन, कृषि विनिर्माण उद्योग एवं परिवहन, विकास व नियोजन के साथ–साथ राजस्थान की जनसंख्या एवं अर्थव्यवस्था आदि सम्मिलित किया गया है। प्रायोगिक कार्य में मानचित्र – वर्गीकरण एवं मानचित्रांकन, आँकड़ों का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण, सांख्यिकीय आँकड़ों का निरूपण, सुदूर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना तन्त्र, समपटल सर्वेक्षण तथा क्षेत्रीय अध्ययन सम्मिलित है। साथ ही कक्षा 11 की पाठ्यपुस्तक के खण्ड– अ 'भौतिक भूगोल' में पृथ्वी एवं पृथ्वी की गतियाँ, पृथ्वी की आन्तरिक संरचना, महाद्वीप व महासागर की उत्पत्ति, शैल, भूकंप एवं ज्वालामुखी, स्थलाकृति स्वरूप एवं अपरदन, वायुमंडल एवं उष्मा बजट, वायुदाब एवं पवनें, जलवायु एवं वर्षा, जैव विविधता एवं पारिस्थितिकीय तंत्र आदि सम्मिलित है। इसी तरह खण्ड– ब 'भारत का भूगोल' में भारत के स्थिति, विस्तार, विविधता में एकता, संरचना, उच्चावच, स्थलाकृतिक प्रदेश, जल प्रवाह, जलवायु, मानसून, प्राकृतिक वनस्पति, मृदा, प्राकृतिक आपदाएँ एवं प्रबंधन के साथ–साथ राजस्थान का परिचय, भौतिक स्वरूप, अपवाह तंत्र, जलवायु, वनस्पति एवं मृदा को सम्मिलित किया गया है। प्रायोगिक कार्य में मानचित्र, मापक, प्रक्षेप, उच्चावच प्रदर्शन विधियाँ, स्थलाकृतिक मानचित्र, ऋतु उपकरण एवं मौसम मानचित्र, जरीब व फ़ीता सर्वेक्षण को सम्मिलित किया गया है। इससे पूर्व की कक्षाओं में भूगोल संबंधित कुछ अध्याय सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित किये गये हैं।

भूगोल में जनसंख्या संगठन, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरणिक, औद्योगिक गतिविधियों का वैश्विक परिदृश्य में अध्ययन किया जाता है, जो सभी वैश्वीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित है। अतः राजस्थान के परम्परागत से वैश्वीकरण की ओर बढ़ते सामाजिक ढांचे की आम जरुरतों और भूगोल शिक्षण के अन्तर्सम्बधों को जानने, अर्थात लगातार नवीन ज्ञान, तकनीकी तथा विचारों की और बढ़ते समाज की आवश्यकता का पता लगा कर लगातार पाठ्यक्रम तथा शिक्षण को अध्यतन किया जाना आवश्यक है।

**संदर्भ :–**


1. सदगोपाल, अ. (2009). शिक्षा में बदलाव का सवाल। नई दिल्ली, ग्रंथ शिल्पी।
2. एनसीईआरटी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद।
3. मीणा, ग. स. (2019, जुलाई 19). ताकि विकास में सहयोगी बने शिक्षा लेख। उदयपुर, राजस्थान, भारत, राजस्थान पत्रिका।
4. शर्मा, ह. (2018, नवंबर 13). मानव भूगोल : प्रकृति व विषय क्षेत्र. Retrieved जुलाई 24, 2019, from examnotes.online: http://examnotes.online



पता– नटवर तेली, महावीर कॉलोनी, कानोड़, जिला– उदयपुर (राज.) पिन– 313604

Email - natwarteli@gmail.com, Mob. 9460695814

संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
Vol. 11, Issue 11-12
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
पृष्ठ : 30-34

# Nirad C Chaudhury : AS AN AUTOBIOGRAPHER

**Poonam Yadav**
RESEARCH SCHOLAR, SINGHANIA UNIVERSITY.

Why does an individual desire to compose their autobiography? Is it to vindicate oneself, to vindicate oneself to contemporaries, or to vindicate oneself to posterity? Undoubtedly, in one sense, an autobiography is a manifestation of ordinary human vanity. One does not wish for their accomplishments to be entirely forgotten by others. Additionally, human recollections are fleeting, and the permanence of the written word is far more enduring.

If an author were to commence their autobiography by disclosing their date of birth and subsequently recounting every detail of their lengthy and uneventful life, such an approach would not be well-received by a significant portion of readers. During the Victorian era, when a prominent politician passed away, a designated individual was tasked with composing an official biography that was presented to the public in a chronological manner. The author of said biography took great care to ensure that all of the leader's accomplishments and written works were included in the text. However, there exist biographies and autobiographies that have been written from a distinct perspective and in a dissimilar style. Andre Malraux's Anti-Memoirs serves as a prime example of this. Malraux's work is a rebellion against the convention of composing memoirs in a chronological sequence. His approach involves writing from the standpoint of subject matter, while also incorporating his own recollections and reflections. He traverses continents, periods, and subjects without adhering to any particular timeline or logical progression.

Lord Haldane's autobiography is widely regarded as one of the finest examples of English literature. In this work, Haldane takes an objective view of his own life and, in the final chapter, provides a comprehensive summary of his experiences and the lessons he has learned. One of the key themes that emerge from his reflections is the notion that a single lifetime is sufficient for any individual. Haldane also emphasizes that the quality of one's work and the passion with which it is pursued are ultimately more important than the outcome or success of any given endeavor. This philosophy reflects the perspective of a courageous, fair-minded individual who possesses a clear-

eyed understanding of both himself and the world around him.

The primary purpose of composing an autobiography is to compile and preserve in a book the recollections of one's past that have illuminated and enriched the entirety of one's being. It is not feasible to undertake the writing of one's autobiography during youth, as one is still preoccupied with aspirations for the future. Rather, it is during the twilight of one's life, when all fervor has dissipated and one no longer harbors dreams of the future, that the time is ripe for reflection, recollection, and summation.

The Autobiography of An Unknown Indian, authored by Nirad C. Chaudhuri, is a literary work that stands alongside the classic self-revelations of Mahatma Gandhi and Jawaharlal Nehru. While it is natural to compare autobiographies, such comparisons can often be superficial. Beyond the fact that these works are personal accounts of their respective authors, there exists no commonality between them. It is therefore inappropriate to group together books that are written in different tones and styles. The story of my experiments with Truth starts with a religious proposition :

"What I want to achieve, - what I have been striving and pining to achieve these thirty years, is self-realization, to see God face to face, to attain Moksha. I live and move and have my being in pursuit of this goal. All that I do by way of speaking and writing and all my ventures in the political field are directed to this same end".[1]

At this juncture, we possess a vantage point from which to observe both the world and its extraneous facets. Jawaharlal Nehru's methodology towards existence and its predicaments diverges from that of Gandhi's. Nehru expounds in The Discovery of India :

*"My early approach to life's problems had been more or less scientific, with something of the easy optimism of the science of the nineteenth and early twentieth century. A secure and comfortable existence, and the energy and self-confidence I possessed, increased that feeling of optimism. A kind of vague humanism appealed to me. Religion, as I saw it practised, and accepted even by thinking minds, whether it was Hinduism or Islam or Buddhism or Christianity, did not attract me".*[2]

Nehru further says :

*"Essentially I am interested in this World, in this life, not in some other world or a future life".*[3]

Nirad Chaudhuri's autobiography chronicles the journey of an individual who struggles to establish a sense of self amidst the perplexing cultural milieu of the nation. He chooses to identify himself as an obscure Indian.

Consequently, all three writers adopt a definitive stance and articulate their perspectives on

life and the world.

It is challenging to discuss an "autobiographical style" or "autobiographical form" as there is no such genre, style, or form. As evidenced by the autobiographies of Nehru and Gandhi ji, the book's style and form are determined by the author's approach to their past and entire life. An autobiography presupposes several things, including the writer's status as a national figure in politics, literature, or religion. Additionally, it assumes that the facts of their life are as significant to them as they are to their readers, and as such, the facts of their life and history converge at a crucial point. Through their life, we gain insight into national history at a specific time, as exemplified in Nehru's "An Autobiography" and Nirad Chaudhuri's "Autobiography of an Unknown Indian."

The Autobiography of An Unknown Indian is dedicated to the remembrance of the British Empire in India, and Chaudhuri endeavors to provide a comprehensive portrayal of India's interaction with the western world. In the preface to the autobiography, Chaudhuri explicitly states his purpose for the work:

*"The story I want to tell is the story of the struggle of a civilization with a hostile environment, in which the destiny of British rule in India became necessarily involved. My main intention is thus historical, and since I have written the account with the utmost honesty and accuracy of which I am capable, the intention in my mind has become mingled with the aspiration that the book may be regarded as a contribution to contemporary history".*[4]

Hence, the autobiographical nature of the work serves as a mere instrument to achieve a particular objective. Nonetheless, it would be remiss to underestimate the significance of the book, as it chronicles the life story of an individual whose beliefs are often at odds with those of his compatriots. Chaudhuri is not the sole author to explore the theme of the Indo-British encounter. In her historical novel, The Golden Honeycomb[5], Kamala Markandaya endeavors to provide a fictional appraisal of this encounter. The novel spans the period from the 1857 uprising to India's attainment of independence in 1947. It depicts an evolutionary process in which dialectical interaction shapes events through an apparent opposition between the foreign and the indigenous, represented by two distinct ways of life, cultures, and political systems. The rural masses in India continue to adhere to their traditional lifestyle, except for a "new class" of natives who occupy a small niche in the imperial scheme, paying a heavy price in total subservience to their foreign masters and almost complete alienation from their land and people. The teeming populace, with its deep-rooted traditions, represents the other pole, the golden honeycomb, where bees collect honey and imperial poachers drain it away.

Numerous authors have demonstrated how a limited cohort embraced the lifestyle and customs of the novel (British) sovereign and, as it were, became 'anglicized'. They were assimilated by the

novel rulers into their administrative, educational, and cultural establishments. Consequently, they constituted the core around which a novel class eventually materialized. The advent of this novel class has been expounded upon by Chaudhuri in virtually all of his literary works.

In The Autobiography of An Unknown Indian, Chaudhuri grapples with a sense of discordance with his Indian heritage, which may be attributed to his European sensibilities acquired through English education and Western influences. Chaudhuri articulates an emotional connection that has persisted between himself and England since his formative years. The initial three chapters of the book delve into Chaudhuri's recollections of his childhood in Kishorganj, his birthplace, Banagram, his ancestral village, and Kalikutch, his mother's village. Additionally, Chaudhuri dedicates a chapter to England, wherein he shares his impressions of the country. These impressions were formed through his readings and limited interactions with Englishmen.

Chapter IV of Chaudhuri's work is entirely dedicated to an analysis of his impressions of England. Within the Autobiography, there exists a dedicatory note that succinctly encapsulates Chaudhuri's perspectives on the British raj. This note comprises two distinct points, one pertaining to politics and the other to culture. Specifically, the dedicatory note states:

*"To the memory of the British Empire in India which conferred subject hood on us but withheld citizenship."*[6]

A potent political accusation is observed in this context. Chaudhuri's second assertion is as follows :

*"All that was good and living within us was made, shaped, and quickened by the same British rule".*[7]

Chaudhuri's Autobiography does not overtly articulate the profound correlation between the two aspects. On one hand, he elucidates the unjust treatment meted out to us by the British, while on the other, he acknowledges the advantages. Chaudhuri unequivocally conveys that his motive behind penning his Autobiography is of a historical nature. Kushwant Singh expounds on Chaudhuri's Autobiography :

*"Nirad had been writing in Bengali for many years. But it was not until the publication of his first book in English, The Autobiography of An Unknown Indian that he really aroused the interest of the class to which he belonged and which, because of the years of indifference. to him, he had come heartily to loathe the Anglicised upper-middle class of India".*[8]

Regarding the rationale behind Chaudhuri's decision to dedicate his book to the British Empire, Kushwant Singh expounds :

"That having lost their own traditions (the Anglicised upper middle class) and not having fully

imbibed those of England, they were a bastard breed with pretensions to intellectualism that seldom went beyond reading blurbs and reviews of books. He therefore decided to dedicate the work "To the British Empire". The wogs took the bait and having only read the dedication sent up a howl in protest. Many people, who would not have otherwise read the autobiography, discovered to their surprise that there was nothing anti-Indian in its pages..... And at long last India had produced a writer who did not cash in on naive Indian isms but could write the English language as it should be written" as few, if any living Englishmen could write."[9]

**References :**


1. M. K. Gandhi, The Story of My Experiments with Truth, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1927, Introduction.
2. Jawaharlal Nehru, The Discovery of India, The Signet Press, Calcutta, 1946, P. 10.
3. Ibid, P. 11
4. Nirad C. Chaudhuri, The Autobiography of An Unknown Indian, Jaico Books, Bombay, 1964, P. ix.
5. Kamala Markandays, The Golden Honeycomb, B. I. Publications, New Delhi, 1977
6. The Autobiography of An Unknown India, P. v.
7. Ibid.
8. Kushwant Singh, "Nirad Chaudhuri", in Rahul Singh(ed), Kushwant Singh's India, IBH Publishing House, Bombay, 1969, P. 189.
9. Kushwant Singh's India, P. 190

संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 11, Issue 11-12
पृष्ठ : 35-39

# ज्ञान चतुर्वेदी की रचना 'पागलखाना' में व्यक्त सामाजिक चेतना

**कु० विजय लक्ष्मी**, शोध छात्रा,
**डॉ० राकेश चन्द्र,** एसोसिएट प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग, जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर।

**भूमिका :-**

ज्ञान चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य में श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, रवीन्द्रनाथ त्यागी और मनोहर श्याम जोशी जैसे व्यंग्यकारों की पीढ़ी को आगे बढ़ाया है। ज्ञान चतुर्वेदी ने व्यंग्य लेखन की एक विशिष्ट शैली को अपनाया है। व्यंग्य उपन्यासों– बारामसी, नरक यात्रा, मरीचिका इत्यादि में व्यंग्य लेखन की इस शैली को लोगों ने पसंद किया है। इसी यात्रा में आगे बढ़ाते हुए ज्ञान चतुर्वेदी का 'पागलखाना' उपन्यास वर्ष 2018 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास को 32वें व्यास सम्मान (2022) से सम्मानित किया गया है।

**विषय-प्रवेश :-**

ज्ञान चतुर्वेदी का जन्म 2 अगस्त, 1952 को झाँसी (उत्तर प्रदेश) के मऊरानीपुर में हुआ। वह पेशे से चिकित्सक थे। भारत सरकार के बीचएचईएल अस्पताल में हृदय रोग विभाग में रहते हुए उन्होंने सेवानिवृत्ति प्राप्त की है। ज्ञान चतुर्वेदी ने अपने लेखन यात्रा की शुरूआत 1970 के दशक में की। उनका पहला उपन्यास 'नरक यात्रा' है, जो चिकित्सा शिक्षा और व्यवस्था पर व्यंग्य के रूप में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद बारामासी, मरीचिका और 'हम न मरब' उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'इंडिया टुडे' तथा 'नया ज्ञानोदय' सहित कई दैनिक मसाचार–पत्रों में काफी समय तक उनके व्यंग्य छपते रहे।

'पागलखाना' ज्ञान चतुर्वेदी की नवीनतम रचना है। यह रचनाकार की दृष्टि का अभिन्नतम रूप है। इस रचना को पढ़ते हुए यह लगता है कि रचनाकार बार–बार पाठकों के सामने दस्तक देता है, अपने नए सामर्थ्य और नवीन विषयों के साथ। 'बाजार' इस पुस्तक के केन्द्र में है। बाजार किस प्रकार व्यक्ति के व्यवहार, उसके चरित्र को बदलता है, उसे रचना दर्शाती है। रचना एक टाइम मशीन में बैठकर हमें आगे ले जाती है। यह उन खतरों से हमें जागरूक करती है जो बाजार के कारण हमारे सामने आ रही है।

रचनाकार पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर ही यह लिख देता है– ''उन पागलों की कथा जो जीवन को बाजार से बड़ा मानते रहे।''

इस वाक्य से रचनाकार अपनी रचना के उद्देश्य को गंभीरपूर्वक सामने रखता है। वह स्पष्ट करता है कि रचना बाजार से अधिक बाजार के गिरफ्त में आए लोगों की है। फैंटेसी और कल्पनाओं के माध्यम से पात्रों के उपजते हालातों को टटोलने का प्रयास रचना में किया गया है। यहाँ व्यंग्य चुभते हुए नस्तर जैसा है।

बाजार ने मनुष्य की चेतना और संवेदना को पढ़ा है। उसने समाज के रूप में मानवीय कमजोरियों, व्यक्ति के प्रेम, घृणा, गुस्से और घमंड को समझा है और उसी अनुरूप अपने लिए जगह की तलाश की है। बाजार ने हमारे मन के अकुलाहट को समझा है। यह मन की आकांक्षाओं को गहराई तक समझने का प्रयास किया। बाजार की सफलता इसी प्रक्रिया में है कि वह हमारे ऊपर हावी हो जाए और व्यक्ति पर शासन करने में सफल रहे।

'पागलखाना' उपन्यास बाजार की चेतना का चित्र खींचने में सक्षम है। बाजार समाज के किनारे बसा ग्राहक की राह देखने वाला सुविधा–तंत्र नहीं है। वह यह चाहने लगा है कि हमें क्या चाहिए, यह बाजार ही तय करेगा। उपन्यास के व्यंग्य की धार इतनी तीखी है कि जहाँ अपने पाठकों के दिमाग पर चढ़ती है, वहीं व्यवस्था और समाज के हृदय में चुभती है। व्यंग्य की नोक से वह अपने समाज और परिवेश के असली चेहरे को उकेरने में सफल हुआ है। ज्ञान चतुर्वेदी समकालीन यथार्थ को व्यंग्य के साथ सामने लाने में अपनी संवेदनाओं का सार्थकता के साथ प्रयोग करते हैं।

ज्ञान चतुर्वेदी 'पागलखाना' उपन्यास में बाजार को लेकर, तो फैंटेसी रचने का प्रयास करते हैं। यह उसके खतरे दिखाने के साथ समाज और व्यक्ति पर पड़ने वाले उसके प्रभावों का कुशलता के साथ ऑब्जर्वेशन करता है। इस प्रक्रिया को दर्शाते हुए ज्ञान चतुर्वेदी ने लिखा है– ''यह वे भी मानते हैं कि बाजार के बिना जीवन संभव नहीं है। लेकिन बाजार कुछ भी हो, है तो सिर्फ एक व्यवस्था ही, जिसे हम अपनी सुविधा के लिए खड़ा करते हैं। लेकिन वही बाजार अगर हमें अपनी सुविधा और सम्पन्नता के लिए इस्तेमाल करने लगे तो? आज यही हो रहा है। बाजार अब समाज के किनारे बसा ग्राहकों की राह देखता एक सुविधा तंत्र भर नहीं है। वह समानांतर से भी आगे जाकर अब उसकी संप्रभुता को चुनौती देने लगा है।''

'पागलखान' बाजार की गिरफ्त में फँसते जा रहे हमारे समाज और कालांतर में उसके दुष्परिणामों की मनोरंजक, लोमहर्षक और भयावह तस्वीर की कहानी है। व्यंग्यात्मतक लेखन शैली के बेजोड़ लेखक ने भले ही बाजारवाद और उसकी पकड़ में आ रही पूरी दुनिया के दुष्परिणामों की काल्पनिक कहानी यहाँ रची है, लेकिन जो आकलन उपन्यासकार ने दिया है, वास्तव में वह इस बाजारवाद के आरंभ से इसके विध्वंस तक के पागलपन की हकीकत है।

समय ऐसा आया है कि जीवन का हर पहलू बाजार के इशारे पर चल रहा है। विचार, सोच, कपड़े, भाव, प्यार, मुस्कान, संस्कृति, कला, संगीत, साहित्य, लोकजीवन सब कुछ बाजार द्वारा प्रेरित और प्रभावित है। इस प्रक्रिया को देखने के बाद भी कुछ सिरफिरे जीवन को बाजार से बड़ा मानते हैं। जीवन को बड़ा मानने वाले यह सोचकर चलते हैं कि बाजार जीवन के लिए नहीं है। ऐसे लोगों को बाजार की शक्तियों ने पागल करार दिया और ऐसे ही पागलों की कथा ज्ञान चतुर्वेदी के माध्यम से 'पागलखाना' उपन्यास का हिस्सा बना है।

'पागलखाना' उपन्यास अपने समय की कहानी कहता है। रचना मानती है कि इंसान असहाय हो चुका है। खुद को गँवाने के बाद व्यक्ति अपनी तलाश करने लगता है। व्यक्ति का जीवन बाजार के हवाले हो चुका है। व्यक्ति बाजार का गुलाम बन गया है।

''अब जमीन के हर चप्पे पर पहला हक बाजार का ही था। फिर जो भी जमीन बाजार से छूट जाए, उसी पर खेती की जा सकती थी, नदी बह सकती थी और घास को उगने की अनुमति थी। इससे भी बची धरती पर आदमी रह सकता था, या चाहे तो दफन भी हो सकता था।''

लेखक की कहानी इस पागलखाने की चकाचौंध के बीच रहने वाली दुनिया और बाजार से भाग रहे लोगों के पागलपन के साथ ज्ञान चतुर्वेदी की शानदार व्यंग्यात्मक शैली में आगे बढ़ती है। बाजार का अंग बन चुके लोग और उससे भाग रहे लोग एक–दूसरे को पागल मानने का भ्रम पाले हुए हैं। उपन्यास के अंत में बाजारवादी पागलखाने के अभ्यस्त लोगों और बाजारवाद के खिलाफ पगलाए लोगों को बाजारवाद के दुष्परिणामों का पता चलता है तो वे उसके विरूद्ध एकताबद्ध होकर उसका विध्वंस करते हैं। लेखक ने अद्‌भुत व्यंग्यात्मक शैली में बाजारवाद के भविष्य के परिणामों की जो तस्वीर हमारे सामने पेश की है, उसे केवल काल्पनिक नहीं बल्कि एक तथ्यात्मक भविष्य की रूपरेखा माना जाना चाहिए।

वर्तमान समय में बाजार व्यक्ति के करीब आ रहा है। व्यक्ति रिश्तों से दूर जाते हुए बाजार से जुड़ता है और बाजार भी दिल खोलकर स्वागत करता हुआ आता है। भाषा, वर्ण, वर्ग, संस्कृति और सम्प्रदाय की सीमाओं को त्यागकर बाजार मनुष्य के लिए अपने दोनों बाँहें फैलाकर उसे गले लगाता है। हमारे जीवन में जिस गति से बाजार का दखल बढ़ रहा है, उससे यह प्रतीत होने लगा है कि जल्दी ही दुनिया पर बाजार अपना कब्जा जमा लेगा। उपन्यासकार एक ऐसे दिन की कल्पना करता है जब बाजार धूप और चाँदनी की भी कीमत तय कर चुका होगा। ऐसे खौफनाक समय की कल्पना करते हुए उपन्यास में लिखा गया है– ''अभी भी सुबहें सुहावनी होती थीं। शाम भी वैसी ही आती थी। रात भी ठीक उसी तरह उतरती थी। सब कुछ वही था पर कुछ था जो अब वैसा नहीं था। अब भी सुबह तो होती थी, परन्तु सूरज यों ही हर एक को फोकट में उपलब्ध नहीं था। रोशनी और धूप के लिए बाकायदा पेमेंट करना पड़ता था। बाजार का सिद्धांत था कि जीवन में कुछ भी मुफ्त में मिलने की आशा करना भी पाप है– नो फ्री लंचेज, प्लीज . . .। अब सूरज, चाँद, सितारे भी बाजार का हिस्सा बन चुके थे। वे दिन हवा हो चुके थे जब लोग कहते थे कि धूप, रोशनी, पानी और हवा पर सबका बराबर का नैसर्गिक अधिकार है। अब सूर्योदय उन्हीं घरों में होता था जिन्होंने सूर्य का प्री–पेड कार्ड बनवा रखा हो और समय पर इसे रिचार्ज भी करते रहते हों।''

'पागलखाना' उपन्यास में रचनाकार बाजार के प्रभाव में व्यक्ति के नाम और पहचान के बदलते जाने की प्रक्रिया को पकड़ा है। वह मानता है कि आने वाले समय में बाजार के सामने व्यक्ति अपनी पहचान खोकर केवल एक 'कस्टमर' बनकर रह जाए। आधार नम्बर या पैन नम्बर की तरह उसकी पहचान डिजिटल बनकर रह जाए। उपन्यास का नायक भी अपना नाम और पहचान भूल चुका है। बाजार उसे उसकी पहचान करने में मदद करता है– ''नाक पर बहुत ध्यान न दें सर। . . . आजकल तो जो नए कस्टमर कार्ड बनकर आ रहे हैं, उनमें तो नाक

है ही नहीं। . . . फोटो से नाक हटाने का ट्रेण्ड चल रहा है आजकल। कस्टमर यही पसन्द कर रहे हैं इन दिनों . . .' बाजार की नए ट्रेण्ड्स पर नजर रहती है। पर . . . पर नकटा आदमी? वह आश्चर्य में पड़ गया। कभी अपने आस–पास भी तो देखिए न जरा। क्या आपको कोई भी आदमी अजीब लग रहा है यहाँ? चारों तरफ नजरें डालिए सर। . . . सब नकटे हैं पर सभी।''

'पागलखाना' उपन्यास बाजार के असहज होते जाने की प्रक्रिया में संविधान और राजव्यवस्था के स्वरूप में आ रहे परिवर्तनों की प्रवृत्ति को उभारता हुआ आया है। व्यंग्य का स्वरूप यहाँ अधिक गहरा है– ''संविधान का क्या हुआ? संविधान की रक्षा की शपथ लेने वालों का क्या हुआ? आजकल वे कहीं भी दिखते क्यों नहीं थे? जो लगाम बाजार पर होनी थी वही लगाम इन लोगों पर कैसे दिख रही थी? . . . क्या अब यहाँ सत्ता वास्तव में सरकार की ही थी? यह क्यों हुआ कि बाजार की सुनामी की एक बड़ी–सी लहर में कानून, नियम, नागरिक अधिकार, संविधान धर्म, कायदे, सामाजिक शास्त्र, समाज और उसका हर सिस्टम कचरे की तरह बह निकला था।''

उपन्यासकार ने बाजार के प्रभाव को संविधान संशोधनों तक की प्रक्रिया में देखा है। उसे सरकार और उसकी नीतियाँ बाजार से प्रभावित दिखती हैं। बाजार की शक्तियों ने सब को चुप कर दिया है। कोई भी किसी नीति अथवा बदलाव का विरोध करने में सक्षम नहीं है या संकोच का अनुभव कर रही है। ज्ञान चतुर्वेदी ने इसे दर्शाते हुए लिखा है– ''वे संविधान में इतने संशोधन करा चुके हैं कि अब संविधान का हर पेज कटा–पिटा है। अब उसे पढ़ना मुश्किल है, समझना तो और भी मुश्किल। . . . हमें बेदखल करना एकदम संविधान– सम्मत घोषित कर दिया जाएगा। वे सरकार का आदेश लेकर आएँगे। वे हमें मुआवजा थमा देंगे। वे हमारा कान पकड़कर हमें सड़क पर बिठा दें तो अदालत भी बस यही कहकर रह जाएगी कि आपको इसका मुआवजा तो दिया जा चुका है न?''

ब्रिटिश साम्राज्य के बारे में प्रसिद्ध था कि वहाँ सूरज कभी नहीं डूबता, लेकिन वह दौर भी समाप्त हो चुका है। समय के करवट लेने से बड़ी ताकतें झुक जाती है। लेखक का विश्वास है कि बाजार के विरूद्ध भी एक दिन विद्रोह होगा। समय द्वारा बाजार के विरूद्ध विद्रोह। बाजार ने सोचा ही नहीं था। अपने स्कीम में उसने इस बात का इंतजाम नहीं किया था क्योंकि बाजार तो स्वयं को समय से परे मानता था।

''सर समझने की कोशिश तो कीजिए। . . . दरअसल, समय ने विद्रोह कर दिया है . . . किसने? क्या कर दिया है? बाजार पूछने लगा। सरजी, समय ने विद्रोह कर दिया है। वह फिर बोला। समय ने विद्रोह? बाजार आश्चर्यचकित है।''

ज्ञान चतुर्वेदी का मानना है कि जिस गति से बाजार का दायरा बढ़ रहा है, वह दिन दूर नहीं जब बाजार की बाढ़ के पानी में सब डूब जाएँगे और जो डूबने से बचने का प्रयास करेगा, वह पागल समझा जाएगा। बाजार के अखंड साम्राज्य की भयावहता को दिखाने के लिए लेखक ने जो काल्पनिक, दुनिया रची है, वह न सिर्फ गुदगुदाती है बल्कि जबरदस्त चोट भी पहुँचाती है। इस उपन्यास में रचनाकार बाजार का मानवीकरण करते हुए पाठकों को यह बताने में सफल हुआ है कि बाजार एक साथ नायक और खलनायक दोनों हैं।

**निष्कर्ष :-**

ज्ञान चतुर्वेदी का उपन्यास 'पागलखाना' व्यक्ति सत्य को उभारने के कारण विशिष्ट है। इस उपन्यास में लेखक पूरे समाज को नायकत्व प्रदान करता है। किसी खास व्यक्ति के बदले पूरे समाज को प्रतिनिधित्व देने से उपन्यासकार बाजार के गहरे, सूक्ष्म, गंभीर तथा चिंतनीय प्रभावों को रोचकता के साथ रखने में सक्षम हुआ है। 'पागलखाना' हिन्दी साहित्य का संभवतः पहला ऐसा उपन्यास है जहाँ पात्र नहीं है किन्तु पात्रता हर पंक्ति में निबद्ध है। उपन्यासकार ने कल्पना के सहारे एक विराट सत्य को सामने रखा है जो भाषा, शब्द और शिल्प के माध्यम से एक श्रेष्ठ उपन्यास बन गया है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1. ज्ञान चतुर्वेदी, पागलखाना का कवर, पृ० सं०
2. ज्ञान चतुर्वेदी, पागलखाना, पृ० सं० 32
3. वही, पृ० सं० 31
4. वही, पृ० सं० 21
5. वही, पृ० सं० 73
6. वही, पृ० सं० 31
7. वही, पृ० सं० 69
8. वही, पृ० सं० 271


rajesh.rajan08@gmail.com